Chap-6

- षष्ठम् - अध्याय -

" सामाजिक - जीवन - मूल्य "

आमुख :-

पूर्ववर्ती विवेचन में दृष्टिगत किया जा चुका है कि मूल्य ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करता है, और समाजगत अन्त: क्रिया की व्यवस्था को अनुशासित करता है । मूल्य, प्रतिमान, संकल्प, उद्देश्य, नीतियाँ तथा आदर्शों को सामाजिक जीवन में निर्धारित करता है । परिणामत: सामूहिक जीवन संघर्ष की संभावनाओं या असंतोष के भर जाने के कारण मूल्यों में टकराहट की स्थिति आरम्भ हो जाती है । इस स्थिति में नये मूल्यों की सृष्टि होती है । आज युवा वर्ग में ये मूल्य परिलक्षित होते हैं । युग परिवेश के साथ-साथ जीवनगत परिस्थितियों में व्यक्तिगत, समाजगत, आर्थिक , नैतिक आध्यात्मिक तथा राजनीतिक जीवन-मूल्यों में परिवर्तन होता है । जिसके आधार पर कह सकते हैं कि व्यक्ति विशेष की धारणाओं और दृष्टिकोणों में परिवर्तन आने से सामाजिक धारणाओं और दृष्टिकोणों के मानदण्ड बदल जाते हैं ।

द्वितीय अध्याय में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि इस युग में विभिन्न धार्मिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों के कारण नारी शिक्षा एवं निम्न वर्ग के प्रति उदारता आदि पर बल दिया गया । परिणामत: सामाजिक जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण पनपने लगा । दाम्पत्य जीवन, आज्ञा-पालन, पवित्रता, नैतिकता समाज-सेवा, त्याग आदि के मान दण्डों में परिवर्तन आने लगा, इसके साथ-साथ शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण भी व्यक्ति में बौद्धिक चेतना बलवती होती गयी । प्रस्तुत अध्याय में युगीन उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में बदलते हुये सामाजिक दृष्टिकोण का विवेचन करेंगे । तृतीय और चतुर्थ अध्याय में यह दृष्टिगत किया जा चुका है कि प्रथम कोटि के उपन्यासकार सामाजिक जीवन-मूल्यों तथा परम्पराओं व आदर्शों के प्रति मोह भंग नहीं कर पाये हैं, जबकि द्वितीय प्रकार के लेखक सामाजिक मूल्यों के स्थान पर व्यक्तिवादी जीवन-मूल्यों को विशेष महत्व देते हैं । यही कारण है कि समसामयिक उपन्यासों में नई परिस्थितियों के साथ सामाजिक जीवन-मूल्यों की भी नव प्रतिष्ठा स्वाभाविक है जिनका विवेचन किंचित विस्तार के साथ किया जा रहा है :-

"बदलते हुए सामाजिक दृष्टिकोण"

व्यक्ति चेतना के कारण सामाजिक जीवन का प्रत्येक पक्ष परिवर्तित हो रहा है । स्वाधीनता के पश्चात् भारतीय समाज ने एक करवट बदली, एक नयी दिशा ग्रहण की । नई योजनाओं व नयी दृष्टि के साथ समाज का व्यक्ति अपने कर्तव्य और अधिकारों को समझने लगा है । समाज में फैली कुरीतियों व रूढ़ियों को दूर करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं । व्यक्ति को समाज की मान्यताओं व धारणाओं के संबंध में पुनः सोचने का अवसर मिला । आज सामाजिक उत्थान की भावनाओं को लेकर अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई है । शहरी और ग्रामीण परिवेश के विभिन्न वर्गों में सामाजिक मान्यताओं व धारणाओं, अभिवृत्तियों, संकल्पों, आदर्शों, व्यवहारों मूल्यों में आर्थिक विषमता और तनाव के कारण बहुविध परिवर्तन होने लगा । युवा वर्ग ने पुरातन के स्थान पर आधुनिक विचारों का प्रतिपादन किया । इससे समाज में व्यक्ति के रहन-सहन, कार्य कलापों और आचरण में अन्तर आने लगा । फलस्वरूप सामाजिक जीवन-मूल्य भी बदलने लगे ।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है । बदली हुई परिस्थितियों के साथ साथ मानव संबंध, उनके कार्य व्यापार, सभ्यता, संस्कृति, विश्वासों, मान्यताओं, रीति-नीतियों, तथा धारणाओं में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से परिवर्तन आने लगा । प्राचीनता के प्रति अनास्था का भाव युवा वर्ग में आया और आधुनिक बोध की प्रक्रिया में सामाजिक जीवन मूल्य संक्रमण की स्थिति के रूप में गुजरने लगे । व्यक्ति पर थोपी गई सामाजिक मान्यताएं, उसके नियम एवं प्रथाएं टूटने लगीं, क्योंकि अपने व्यक्तित्व के विकास में वह उन्हें बाधक मानने लगा । इसके परिणामस्वरूप सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो चला ।

वस्तुतः आधुनिक बोध के कारण सामाजिक मानदण्ड टूट गये, आदर्श संकल्प तथा सदवस्तु में अन्तर आ गया । नयी दृष्टि तथा नयी अर्थगत समस्या

ने सामाजिक संबंधों को खोखला व रीता बना दिया । सामाजिक भाव शून्यता के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परस्पर विरोधी मूल्यों की टकराहट की स्थिति आ गयी, उपन्यासकारों ने आधुनिक संदर्भ ऐसी सामाजिक संचेतना को ग्रहण कर व्यक्ति के अन्तर्विरोध, कुण्ठा, भय, संत्रास, निराशा, आदि को जीवन-मूल्यों के घात-प्रतिघातों को यथार्थ स्तर पर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया । "आज की परिस्थितियों से उत्पन्न वास्तविक संत्रास का चित्रण एवं अस्तित्व की सही चुनौतियों को सार्थक स्वीकार करने का प्रयत्न इन उपन्यासों में प्राप्त होता है"[A] और बदलते हुए सामाजिक दृष्टिकोण का चित्रण जिन उपन्यासों में प्राप्त होता है ,उनका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

"अलग अलग वैतरणी" उपन्यास में सामाजिक जीवन मूल्यों के प्रति आदर तथा स्वीकृति हमें शशिकान्त,जग्गन मिसिर ,खलील मियाँ और विपिन के अनेक कथनों से प्राप्त होते हैं । इनके विचार, चिन्तन सामाजिक मूल्यों के पक्ष में रहते हैं । जीवन मूल्यों की इस टूटन ने उनकी मानसिकता को भारी ठेस पहुंचाई है । यहाँ तक कि वे मास्टर शशिकान्त, खलील मियाँ और विपिन तो करैता को छोड़कर दूसरी जगह चले जाते हैं । "ई गाँव तो भभीखन है ।"[1] यहाँ कैसे रहें ? यह गाँव तो अब वह रहा ही नहीं । जिधर देखता हूँ अजीब कुहराम है । सभी परेशान हैं, सभी दुखी हैं । पता नहीं इस गाँव पर किस ग्रह की छाया पड़ी है , किसी के चेहरे पर खुशी दीखती ही नहीं ।"[2] विपिन की ऐसी बात को सुनकर खलील मियाँ सामाजिक जीवन-मूल्यों के प्रति धारणा टूट जाती है । और जहालत गरीबी और तंगख्याली की परतें एक पर एक न जाने कब से जमती चली आ गयी हैं । मैं नहीं समझता कि कोई इसे यक-ब-यक बदल सकता है । इस फिज़ा में ही कुछ ऐसा दमघोंट और मुर्दा-सा है कि हर मनसूबा पस्त हो जाता है ।"[3] विपिन करैता गाँव को छोड़ते समय यह बताता है कि हमारे गाँव में सामाजिक जीवन-मूल्य नहीं हैं । वह भाईचारा ,प्रेम,सौहार्द्र, परोपकारी भाव, त्याग, सद्विचार, आचरण सभी बदल गये हैं । "करैता, जैया बदनाम, दरिद्र, गिरा हुआ बीमार गाँव शायद ही इस देश में कहीं होगा । यहाँ कोई भला आदमी रह नहीं सकता है ।"[4]

सन् 1960 के पश्चात् क्या गाँव, क्या शहर हर जगह का समाज बदल रहा है । सामाजिक जीवन-मूल्य तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं । "सूखता हुआ तालब" का देव प्रकाश और चेइनया भी इसी प्रकार गाँव छोड़कर चले जाते हैं । जब समाज में, धर्मेन्द्र जैसा पापी[5], सुखदेव जैसा कूटनीतिज्ञ नेता[6] और भ्रष्टाचारी, भास्कर जैसा कामी[7], नारायन और माधव सिंह जैसे बलात्कार करने वाले, चंचल सिंह बदमाश सरपंच[8], रूप्पन तथा वैद्य भ्रष्ट तथा दुराचारी[9], विद्यमान हैं तब तक समाज में भले आदमी कैसे रह सकते हैं । "यह गाँव सचमुच रहने लायक नहीं है । गाँव में कोई किसी का दुख दर्द नहीं सुनता है ।"[10]

यही स्थिति "राग दरबारी" उपन्यास में रूप्पन, सनीचर, वैद्यजी , प्रिंसीपल खन्ना, बेला आदि पात्रों केद्वारा समाजिक मूल्य हीनता की ओर दृष्टिगोचर हैं । इन पात्रों का समाज के लिए न संकल्प, न आदर्श और न प्रतिमान ही है । रंगनाथ बदलते सामाजिक मूल्यों के प्रति चिन्तित है । पंडित राधे लाल जैसा झूठा गवाही देने वाल, "जिन्हें झूठी गवाही देने में उच्च कोटि की दक्षता मिल चुकी थी, जिन्हें आज तक बड़े से बड़ा वकील भी जिरह में नहीं उखाड़ सका था ।..... पूरे जिले के मुकदमेबाजों और गवाही में अभूतपूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे । ऐसे व्यक्ति समाज की उन्नति और विकास में बाधक होते हैं । यह सिद्ध होता है । इस सातवें दशक से लेकर अब तक का भारतीय समाज आदर्शहीनता तथा मूल्यहीनता की ओर बढ़ रहा है । "राग दरबारी" उपन्यास में ग्राम जीवन के समाजिक जीवन-मूल्य अवमूल्यन की स्थिति तक पहुंच चुके हैं । दृष्टिकोण का यह परिवर्तन व्यवहारिक जीवन पर भी पड़ता है ,जिसकी चर्चा परवर्ती विवेचन में की जायेगी ।

यही नहीं, उपन्यासों में समाज का उज्ज्वल पक्ष का भी अंकन हुआ है । समाज में सभी तरह के लोग होते हैं, बुराई के साथ साथ अच्छाई भी परिलक्षित है । "अमृत और विष" में सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाले डॉ० आत्मा राम हैं । वह कर्मनिष्ठ और ईमानदार व्यक्ति हैं । उनका हर सम्भव कार्य समाज सुधार तथा परहित के पक्ष में होता है । "अलग अलग वैतरणी"

का विपिन भी सामाजिक जीवन-मूल्यों का हितैषी है । शशिकान्त सामाजिक त्रुटियों को बहिष्कृत करके, स्वस्थ जीवन-मूल्यों को महत्त्व देता है । "सूखता हुआ तालब" का देव प्रकाश ईमानदारी के साथ भलाई के कार्य करता है वह बदलते हुए गाँव के प्रति चिन्तित है । "गाँव बड़ी तेज़ी से विकसित हो रहा है, आधुनिक हो रहा है ।"[11] यही कारण है कि सामाजिक जीवन में मूल्य संक्रमण तेज़ी से हो रहा है । फलत: सांस्कृतिक मूल्य ह्रासात्मक स्थिति को प्राप्त हो रहे हैं । जैसाकि पहले भी निर्दिष्ट किया जा चुका है कि आज का व्यक्ति समाज के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध नहीं मानता । इसीलिए सामाजिक मापदण्ड ही सत्य नहीं हो सकते । "समाज जिसे मान्यता देता है, वही सत्य नहीं है । सत्य तो इन सब के परे एक परिस्थिति विशेष है ।"[12] यही नहीं मानव ने समाज की व्यवस्था को समय समय पर झकझोरा है । उसकी मान्यताओं धारणाओं को बदला है । "अब तक व्यक्तियों ही ने समाज को झकोला दिये हैं । पुराना समाज प्राय: इन्हीं झकोलों से टूट-टूटकर क्रमश: नया बन रहा है ।"[13] मैंने अपने समय की प्रगतिशील सामाजिक और बौद्धिक मान्यताओं को निष्ठा सहित पूरी जवानी भर अस्वीकार किया है ।[14]

समकालीन "अमृत और विष" उपन्यास में बदलती हुई सामाजिक धारणाएं रमेश और रानी के वैवाहिक जीवन से संबंधित हैं । रानी बाल-विधवा है । रमेश उसके साथ अन्तर्जातीय विवाह करके सामाजिक मान्यताओं को तोड़ता है । उसके बदलते हुए दृष्टिकोण में हिन्दुस्तानी जीवन का जो पुराना ढर्रा है वह व्यक्ति के जीवन विकास में बाधक है । आधुनिक युग बोध में युवा वर्ग के विचार पुराने समाज को बदल कर नये समाज की स्थाना से है । यही कारण है कि "क्यों फँसे" का भास्कर निर्मुक्त होकर समाज में अनेक स्त्रियों के साथ से भोग करता है । वह सामाजिक बंधनों तथा नैतिक नियमों को अस्वीकार करता रहता है ।[15] उसके लिए न आदर्श है , न नैतिकता है और न कोई लक्ष्य है । पंचम अध्याय के अन्तर्गत यह उल्लेख कर चुके हैं कि "डक बंगला" की इरा भी सामाजिक और पारिवारिक आदर्श, कुल मर्यादा तथा नैतिक मूल्यों को नकारती है । वह विधवा होने पर पुनर्विवाह स्व इच्छा से कर लेती है ।[16]

आज स्त्री पुरूष दोनों ही अपने अपने आदर्शों और दृष्टिकोणों पर चलते हैं । "कोरा कागज़" के पात्र निरंजन और जयन्ती दोनों ही स्वइच्छा से तलाक लेने की सोचते हैं । कर्नल साहब उनको और बढ़ावा देते हैं । वह कहते हैं-" मैं उस पर दावा दायर करूंगा । उसे तलाक के लिए मजबूर करूंगा ।"[17] आज व्यक्ति के नये दृष्टिकोण समाज के प्रति पनप रहे हैं, क्योंकि व्यक्ति समाज के प्रति कोई कर्तव्य नहीं समझता है । "अपने प्रति ईमानदार है समाज के प्रति नहीं है क्योंकि समाज कुछ नहीं है ।[18] इसलिए "बनी बनाई व्यवस्था थी वह टूट गयी"[19] आज के समाज में धन,सम्पत्ति, नेता, धर्म, नैतिक, आदर्श तथा सत्य, सभी टूट रहा है । सभी के प्रति व्यक्ति कीधारणाएं बदल रही हैं अत: वह समाज के जीवन-मूल्यों को नकार रहा है ।

सामाजिक जीवन-मूल्यों की स्थपना "माटी की महक" के मैलू काका, गौरी, ठाकुर दे, मोहन तथा रामदीन ऐसे पात्रों द्वारा भी की गई है । इनके हृदय में सामाजिक मूल्यों के प्रति अटूट श्रद्धा है । विश्वास है । आस्था है । गौरी सेवा कार्य करती है । वह समाज के उदात्त जीवन-मूल्यों की स्थापना पर बल देती है । वह "गांव वालों के पास बचा हुआ है सिर्फ ईर्ष्या, द्वेष, गरीबी, आपसी वैमनस्यता.......।"[21] आदि कहकर ऐसे समाज के लिए चिन्तित होती है । मोहन गरीब लोगों को सताते हुए देखकर कहता है - "आप जैसे चन्द लुटेरों ने गांव की मर्यादा ,उसकी गरिमा,उसका इतिहास, पारस्परिक प्रेम,भाई चारे का रिश्ता, लूटकर उसे कब्रगाह बना दिया है ।"[22] आधुनिकता के बोध में ग्राम जीवन में सामाजिक जीवन मूल्य बुरी तरह से बदल रहे हैं । यह समाज के विकास और निर्माण में हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं ।

शहरी और ग्राम जीवन के सामाजिक मूल्यों की टूटन प्रक्रिया का रूप चिड़ियाघर गिरिराज किशोर{1968}, वे दिन {निर्मल वर्मा"1964}, रीछ विश्म्भर नाथ उपाध्याय{1967}, अपना मोर्चा{1973} दूसरी तरफ {महेन्द्र भला} 1975, उसका घर {प्रमोद सिन्हा} 1970, गिरते महल {गुरूदत्त} 1969,पत्थरों का शहर,1971 ,सुबह अंधेरे पथ पर{1967} सुरेश सिन्हा,मछली

मरी हुई (राजकमल चौधरी) 1966, काली आँधी (कमलेश्वर)) 1962), कन्दील और कुंहासे) 1969), सफेद मेमने) 1971) मुरदाघर (जगदम्बा प्रसाद दीक्षित) 1974) टूटती हुई ईकाईयाँ, बारह घण्टे (यशपाल), 1963, आपका बंटी, 1970, जंगल 1969, एक चूहे की मौत 1971, यात्राएं आदि उपन्यासों में बदलते हुए सामाजिक जीवन मूल्यों का चित्रण हुआ है। जीवन-मूल्य (के परिप्रेक्ष्य में) शहरी तथा ग्राम जीवन में टूटन आ रही है। सामूहिकता, पारस्परिक प्रेम, सौहार्द्र, सतीत्व, शान्ति, दया, करूणा, सेवा भाव, ममता, स्नेह, मातृत्व, ब्रह्मचर्य, नैतिकता आदि सभी आपसी द्वेष, ईर्ष्या, अशान्ति, निर्दयता, अकर्मण्यता, अलगाव, चरित्रहीनता, नैतिकता में और धारणाएं नये मूल्यों में बदल रही हैं। किन्तु समाज के नये वर्ग समाजवादी भावना को स्थापित कर रहे हैं।

पूर्ववर्ती विवेचन के आधार पर यह निर्दिष्ट किया गया है कि समकालीन युग में बदलती हुई परिस्थितियों के साथ साथ सामाजिक जीवन-मूल्य, मान्यताओं परम्पराओं तथा नैतिक मूल्यों का सर्वथा ह्रास परिलक्षित होता है। जहाँ एक ओर पुरानी पीढ़ी के पात्र सामाजिक जीवन-मूल्य, परम्परा, मान्यता, आचार विचार, आदर्श आदि मूल्यों से चिपके हुए हैं तो वहाँ दूसरी ओर नयी पीढ़ी अधिकांश पात्र उनके प्रति आक्रोशित तथा चेतनाशील विचार रखते हैं। युगीन उपन्यासों में आत्माराम, परमात्मा बाबू, नवल किशोर, दुर्गा, त्र्यम्बक, श्रीधर, विपिन, देव प्रकाश अजीत आदि पात्रों द्वारा, सेवाभाव, त्याग, भलाई, सच्चाई, समाज हित, सद्भाव आदि परम्परागत जीवन मूल्यों का अंकन किया गया है। किन्तु अधिकांश पात्र सामाजिक मूल्यों के प्रति नवीन दृष्टि एवं नवीन चेतना लिये हुए हैं।

अन्त में यह लक्ष्य किया जा सकता है कि समसामयिक जीवन में सामाजिक आचार विचार, विवाह प्रणाली, संस्कार, पति पत्नी के परम्परागत संबंध, संयुक्त परिवार, वात्सल्य प्रेम, दायित्व, समाज सेवा, आदि के प्रति नये दृष्टिकोण बन रहे हैं। पवित्रता, शील, सतीत्व, जाति व्यवस्था, विधवा

कलंक, सामाजिक रूढ़ियों आदि की भावना टूटती जा रही है ,जबकि तलाक, कम सन्तान, अन्तर्जातीय विवाह, नारी समानता, श्रम का महत्व आदि मूल्यों की विकास की पृष्ठ भूमियाँ तैयार हो रही हैं । इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा और विज्ञान के युग में यद्यपि आध्यात्मिक धार्मिक तथा नैतिक मूल्य अपना अस्तित्व समेट रहे हैं, तथापि आज सामाजिक जीवन-मूल्य किसी न किसी रूप में नवीन दृष्टिकोण लिए हुए समाज में अवशिष्ट हैं ।

"समाजवादी चेतना"

जैसाकि द्वितीय अध्याय में वर्ग चेतना के अन्तर्गत यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि पीड़ित वर्ग, शोषित वर्ग , और उद्योगपतियों के संघर्ष ,जहाँ एक ओर समाजगत मूल्यों को तोड़ा तो वहाँ दूसरी ओर मार्क्सवादी प्रभाव से उद्‌भूत समाजवादी चेतना को विकसि त किया, जिससे नये सामाजिक दायित्व, सहकारिता, नारी स्वतंत्रता, मानव समानता, जाति-पाँति भावना का त्याग और शोषित वर्ग के उत्थान आदि नये दृष्टिकोणों का अभ्युदय समाज में होने लगा । इसीलिए सामाजिक जीवन-मूल्यों के विकास और निर्माण में समाजवादी चेतना का विशेष योगदान रहा है । साठोत्तरी उपन्यासों में जन जीवन के विविध क्षेत्रों में समाजवादी जन चेतना की अभिव्यक्ति प्रायः दृष्टिगोचर होती है । लोकतंत्र शासन प्रणाली समाजवादी चेतना का मूल स्रोत है । भारत देश के संविधान ने जनता के हित और भालई के लिए मौलिक अधिकार दिये हैं । जिससे प्रत्येक व्यक्ति बिना भेदभाव के अपने जीवन का विकास कर सकता है । तत्कालीन लेखकों ने सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत समस्याओं को समाजवादी और साम्यवादी विचारों के अनुरूप अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है । इसीलिए समाजवादी चेतना का प्रभाव आज के उपन्यासों में प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है ।

साम्यवाद शब्द का व्यापक प्रचार लेनिन ने किया जबकि कार्ल मार्क्स ने समाजवादी विचार धारा पर बल दिया था । परन्तु साम्यवाद को आज

कार्ल मार्क्स के दर्शन से संबंधित करते हैं । साम्यवाद अपने लक्ष्य की प्राप्ति रक्त बहाकर करना चाहता है । उसमें सामूहिक उत्पादन, प्रबंध तथा उपयोग का सिद्धान्त है । समाजवादी विचारधारा मानवतावादी आधार पर अपने मूल्यों को प्राप्त करता है । वह शान्ति और रक्तहीन सिद्धांत को लेकर चलता है ।[23] साम्यवाद में शोषक और शोषित वर्ग का सतत: संघर्ष है । अगर सत्ता शोषित यानी मजदूर व श्रमिकों के हाथ आ जायेगी तो वह स्वत: ही अपने जीवन की जरूरत की वस्तुओं को जुटा सकती है । गांधी जी ने समाजवादी मूल्यों पर बल दिया है । साम्यवाद समाजवाद की अपेक्षाकृत अधिक यथार्थवादी है ।

समाजवादी यथार्थवाद में समष्टिवादी चेतना को अधिक महत्त्व दिया गया है । क्योंकि जन क्रान्ति उसकी प्रेरक शक्ति है । "समाज की वर्तमान अवस्था में जो विषमता और अन्तर्विरोध उत्पन्न हो गये हैं, उसका कारण पैदावार के लिए श्रम करने वाली साधनहीन श्रेणी की शोषण से मुक्ति और इस श्रेणी द्वारा स्थापित की गई शोषण हीन व्यवस्था से ही हो सकता है "[24] समाजवादी क्रान्ति ने श्रमिक वर्ग के निरंकुश शासन की बात कही है ।

अत: समाजवादी यथार्थ व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में देखने पर बल देती है । मानव समानता, सामूहिकता, उत्पादन और अर्थ का समान रूप से वितरण, व्यक्ति स्वातंत्र्य, सामाजिक दायित्व, नारी स्वातंत्र्य, सहकारिता, मातृत्व, नारी समता, तथा वर्ग भेदहीन आदि मूल्यों की स्थापना पर जोर दिया जाता है । साथ ही सामाजिक पतन की विकृतियों को दूर करने में योगदान देता है । यथा - चोर बाजारी, अस्पृश्यता की भावना, जाति-पाँति, शोषण, साम्प्रदायिक दहेज तथा अनमेल विवाह आदि । यह सिद्धांत प्राचीन नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को स्वीकार करने में योगदान नहीं देता है । आज के उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में भौतिक मूल्यों तथा सेक्स को महत्ता दी है । और "सर्वहारा" वर्ग के प्रति सहानुभूति सद्भाव, सहायता और उसके अस्तित्व की रक्षा करने का प्रयत्न किया है ।

हमें, समाजवादी चेतना के दर्शन "अमृत और विष" उपन्यास के पात्रों

में मिलता है । बाढ़ से पीड़ित लोगों की मदद रमेश और रानी करती हैं । रमेश अभावों में पला युवक है । और उसे डॉ० आत्माराम खन्ना का भरसक सहयोग प्राप्त होता है । उनके संसर्ग में वह समाजवादी चेतना को लेकर आगे बढ़ता है । "रजा बेटा रमेश अपनी रानीके अनुसार ही जान लड़ा के "समाजवाद" के लिए काम कर रहा है ।"[25] रमेश में सामाजिक दायित्व, परोपकार, जन-हित तथा अक्षम्य सहृदयता है । वह समाजवादी चेतना से बाढ़ ग्रस्त लोगों की जान बचाता है । वह किशोर से कहता है "मैं जानता हूँ समाज के स्वतंत्रत होने के माने हैं व्यक्ति की स्वतंत्रता"[26] पर महत्व देता है ।

इसी समाजवादी मूल्यों का परिचायक 'माटी की महक' के रामपुर का कालीचरण है । वह तेज और बड़ा ही संघर्षशील जनवादी नेता है । वह गरीब किसानों, मजदूरों तथा श्रमिकों का संघ बनाकर धनिक तथा जमींदारों के खेतों को छीनने की कोशिश करता है । वह अन्य कई यूनियनों का नियता है । गांव में समाजवादी चेतना के स्वर फूंक रहा है । पीड़ित लोगों पर जमींदरों के अत्याचार को देख नहीं पाता है । "सर्वहारा वर्ग का आधिपत्य तब तक नहीं हो सकता है जबतक इनके अन्तर "कलास कन्ससनेस" की भावना नहीं पैदा होगी "[27] दूसरी ओर वह कहता है -"मैं गांधीवादी लोगों की तरह भीख की रोटी से इनका पेट भरना नहीं चाहता हूँ मुझे क्रान्ति चाहिये । देश में क्रान्ति होनी चाहिये । जो आर्थिक ढ़ाचे को बदलकर रख दे । समाज के घिनौने चेहरों को खूबसूरत बना दे । पैसे वालों के सामने ये लोग दान मांगने क्यों जायेंगे ? क्यों नहीं ये लोग उनके धन को जबर्दस्ती छीनकर आपस में बांट लेंगे ।"[28] यह मार्क्सवादी सिद्धान्त का ज्वलंत उदाहरण है । यहाँ उत्पादन और अर्थ वितरण की समानता पर बल दिया गया है । समाजवादी चेतना से उग्र साम्यवादी जीवन-दर्श का रूप दिखाई दे रहा है । वह गांधीवादी, मूल्यों के पक्ष में नहीं है । वह तो "गांव के गरीब एवं मजदूरों के बीच घूम-घूम कर उसने क्रान्ति का आह्वान किया ।"[29] इस उपन्यास में समाजवादी

जीवन-मूल्यों के स्थापना में गौरी तथा मैनू काका का भी योगदान है । गौरी गांव के प्रत्येक घर में चर्खे लगाकर, सूती कपड़ा कातकर अर्थ व्यवस्था को सुलझाना चाहती है । वह सहकारिता तथा समानता के मूल्यों की स्थापना करती है । इस प्रकार गांव में दो वर्ग हैं । एक समाजवादी चेतना से प्रेरित तो दूसरा साम्यवादी दर्शन को लेकर, रामपुर के दलित वर्ग को जगाते हैं ।

उपर्युक्त दृष्टिकोण से लगभग समानता रखने वाला समाजवादी भावना और व्यक्ति चेतना से प्रेरित रांगेय राघव का "आखिरी आवाज" उपन्यास है । इसमें आज गांव के समाज में हो रहे गरीबों पर अत्याचार और उनकी दुर्दशा का मार्मिक चित्रण है । आज यह मान्यता उठती जा रही है कि प्रेमचंद कालीन गांव नहीं रहे, गांवों की सहृदयता तथा सौम्यता नष्ट हो गयी है । अर्थ सामूहिक चेतना का आधार बन गया है । पूंजीवाद दिन प्रति दिन अपनी जड़े गहरी कर रहा है । बेचारा किसान टूटता जा रहा है । पहले और तरह से उन्हें सताया जाता था आज उन्हें पार्टी तथा दल बनाकर गांव का सरपंच सताता है । स्वतंत्रता के बाद समाजवादी समाज की स्थापना कहने मात्र के लिए है । हिरदैराम की लड़की के साथ बलात्कार और हत्या करना सामन्ती भोगवादी की तरह की गई । सरपंच के पुत्र होने के नाते कोई कचहरी में उनकी आवाज कोई नहीं सुनता है । आज का कानून बहरा है । अंधा है । रिश्वतखोर है । लोग समाजवाद की दुहाई देते हैं । लेकिन देश में करोड़ों "ऐसे दो-दो कौड़ी के आदमियों के खद्दर पहन लेने से यह थोड़े ही है कि जुल्म होने लगे अरे, रावण राज न रहा । कंस का राज न रहा, हिरनाकुश का राज न रहा । सो इन टुपियों का रह जायेगा ? कल साले भूखे मरते थे । आज हमारे सामने रिश्वत ले लेकर राजा महाराजा बन गये हैं ।"[30] देश में समाजवादी दर्शन की दुहाई देते हैं किन्तु है कहाँ ? गरीब वर्ग आज भी गरीब है, दलित है । पीड़ित है । डॉ० राम गोपाल सिंह के अनुसार इसमें- "वर्ग चेतना से होकर वर्ग वैषम्य से पीड़ित मानव के जीवन की करूण कहानी को अपने उपन्यासों की कथावस्तु बनाया है । और साथ ही उससे मुक्त होने के संघर्ष की चेतना को उभारने की कोशिश की है ।"[31]

उपन्यासों में एक स्थान पर स्वतंत्रता के पश्चात् के समाजवादी जीवन-मूल्यों का चित्रण साम्यवादी आधार पर किया है । "माटी की महक" में कालीचरण "सीधी उंगली से घी नहीं निकलता है । अमीरों की बुखारियों में भरे हुए अनाज को जबर्दस्ती लेने की जरूरत" महसूस करता है । तो दूसरी ओर "आखिरी आवाज" आज का यथार्थ चित्रण करता है । आज समाजवाद के नाम पर त्याग में रिश्वत, सौहार्द्र में द्वेष, शान्ति में अशान्ति तथा कोर्ट में अन्याय मिलता है ।

तत्कालीन युग में समाजवादी विचारधारा का अर्थ कुछ स्वार्थी नेताओं ने गलत लगा लिया है । आज के नेताओं का कोई सिद्धांत नहीं है । इसीलिए जनता और नेता एक दूसरे से कट से गये हैं । परिणामस्वरूप शहर और गांव दोनों ही टूटरहे हैं । "जल टूटता हुआ का जगपतिया भी समाजवादी चेतना का प्रतीक है । वह गांव के नये संबंध स्थापित करता है । मजदूरों, किसानों और भूमिहीनों , को एकत्र कर जमींदार महीपसिंह के विरूद्ध जान हथेली पर रखकर लड़ता है । खेत में जाकर कब्जा करता है । जीत भी उसी की होती है । जगपतिया की ऐसी उग्रवादी चेतना को देखकर सतीश सच्चाई का अहसास करता है । "मगर कहीं गांव बन भी रहा है, वह किसानों और मजदूरों का ।"[32]

समकालीन उपन्यासों में समाजवादी चेतना की अभिव्यक्ति, नदी फिर बह चली (हिमांशु श्रीवास्तव), पानी के प्राचीन, (रामदरश मिश्र) अलग अलग वैतरणी (शिव प्रसाद सिंह), पत्थरों का शहर(सुरेश सिन्हा), आदि उपन्यासों में अनेक अन्तर्विरोधों के साथ चित्रण हुआ है । इन उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, व्यक्तिगत तथा आर्थिक जीवन पक्षों से संबंधित मूल्यों के आधार पर चर्चा हुई है । शोषित वर्गों के अन्तर्विरोध को यथार्थ रूप में उभारा है । यह समाजवादी सच्ची धारणा ही मानवतावाद की ओर ले जाती है जिसमें प्रत्येक मानव का हित निहित है ।

निष्कर्ष :-

अतः यह कहा जा सकता है कि साठोत्तर युग के उपन्यासों में भारतीय

जन-जीवन के अनेक क्षेत्रों में समाजवादी चेतना परिलक्षित है और इसका मूल मंत्री है, समाज के समस्त वर्गों में समानता लाना । इस प्रकार 'सुबह अंधेरे पथ' का राजेन्द्र, 'पत्थरों के शहर' का विवेक, 'प्रश्न और मरीचिका' का उदय, 'अलग अलग वैतरणी' का विपिन, 'माटी की महक' का कालीचरण, अमृत और विष का रमेश तथा रानी आदि पात्र समाज वादी भावना से ओत-प्रोत दिखाई देते हैं । कुछ उपन्यासों स्वातंत्र्योत्तर युग की समाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों का उल्लेख भी हुआ है ।

"मानवतावाद"

पूर्ववर्ती पृष्ठों में समाजवादी चेतना का विवेचन कर चुके हैं । जिससे यह स्पष्ट है कि समाजवादी चेतना ने ही सुषुप्त मानवतावदी भावना को पनपने का सुअवसर प्रदान किया । इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि मानवता वाद भारतीय जन-जीवन के लिए नवीन है । अपितु इसका वेदों में भी उल्लेख किया गया है ।वैयक्तिक संकीर्ण भावना को त्याग कर, विश्व को एक कुटुम्ब में स्वीकार करना ही मानवतावाद है । यह मानव धर्म से संबंधित है । इसमें धर्म जाति, वर्ग सम्प्रदाय, समाज तथा राष्ट्र की सीमित विचार धाराओं का सर्वथा त्याग रहता है । यह उल्लेखनीय है कि मानवता को आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों से जोड़ा गया है । और लौकिक जीवन में इसका महत्त्व स्वीकारा गया है । अत: मैत्री, समानता, दया, करूणा, मानव सेवा भाव तथा संवेदना को मानवीय गुण मानकर संसार में महत्त्व दिया गया है । युगीन उपन्यासों में मानवतावादी जीवन-मूल्यों का अंकन मिलता है ,जिसका चित्रण यहां किया जा रहा है :-

साठोत्तरी युग के उपन्यासों में प्रसंगानुसार मानवतावाद की चर्चा की गई है । विश्व कुटुम्ब की भावना के दर्शन हमें अलग अलग वैतरणी के विपिन के विचारों में होते हैं । मिसिर को दारोगा बिना अपराध के पकड़ता है

तो वह कहता है- "एक आदमी पर अत्याचार होगा और मैं देखता हूं ।"[33] इसी प्रकार "मन का मीत" का विपिन टूटती हुई मानवता की रक्षा करता है । कामिनी भी पर पीड़ा को दूर करना अपना कर्त्तव्य समझती है । भूषण और विपिन का दृष्टिकोण मानवतावादी है । समाज में विपिन अपना कर्त्तव्य समझकर कामिनी और भूषण की शादी करवाकर उन्हे मरने से बचाता है । उसका मानवतावादी दृष्टिकोण विश्रृंखलित मानवता की रक्षा करना है ।"[34] "दायरे" का सत्यदेव मानवतावादी आदर्श को प्रस्तुत करता है । वह लोगों के अंधविश्वास तथा दकियानूस विचारों को दूर करके, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, कम्युनिष्ट परसी आदि के धर्म, वर्ग जाति, को भुला कर मानवता के मूल्यों की सृष्टि करता है । उसका विचार है "इन दायरों से पार होकर देखो, आगे देखो, मनुष्य केवल मनुष्य है, जो इन्हें स्वीकार नहीं करता, वह असली असभ्य और असली बर्बर है ।"[35] वह जातिगत और धर्मगत भेदभाव के प्रति कहता है "आज हिन्दू मुसलमान ,ईसाई, यहूदी, सिक्ख, जैन, सब लकीर के फकीर हैं । किसी में भी मनुष्यता का बल नहीं है ।[36] मानवता के संबंध में फादर के विचार व्यंग्य के रूप में भी अंकित हैं "कब जायेगा यह इन्सान ? वह चाँद पर जाने वाली गाड़ी बनाने वाला है पर एक दिल से दूसरे दिल तक पहुंचने की गाड़ी वह अभी तक नहीं बना पाया।"[37] सत्यदेव हमेशा अन्य पुरूषों के कुकर्म को छिपा लेता है और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देता है । यह उसकी विशालता, महानता तथा मानवता है । नौकरी से निकाल दिये जाने पर भी वह समजा में मानव मानव से प्रेम स्थापित करता है । सहिष्णुता, त्याग, सेवाभाव,दया, सत्य आदि मूल्यों की सृष्टि करता है ।

सत्यदेव की मानवतावादी धारणा का यथार्थ रूप इस कथन में मिलता है, "अब पूर्वीय और पश्चिमीय संस्कृतियों के दिन लद गये.... । अब तो संसार को एक ही संस्कृति की आवश्यकता है । वह दिन आयेगा जब धर्म ,सभ्यता और न जाने ऐसे कितने भेदभाव सदा के लिए मिट जायेंगे । तब मनुष्य का नया

पुनर्जागरण होगा ।"[38] यही नहीं समय बदल रहा है और व्यक्ति के नये दृष्टिकोण बन रहे हैं । इससे उसकी संकीर्णता नष्ट हो रही है । आज मानवता का क्षेत्र धर्म, वर्ग, जाति तक ही सीमित नहीं बल्कि विश्व की कामना का उजागर है । "ॠतुचक्र" का दादा नियति से मानव को महान् मानता है,ऐसा आधुनिक बोध के आधार पर मानव-मूल्यों को स्वीकार करता है ।

मानवतावाद का नारा "जयहिन्द" नहीं "जय जगत "है । "अनंतर" उपन्यास के पात्र बनानि, विश्व कल्याण और मानव चेतना की स्थापना करती है । उसके प्रगतिशील विचार हैं -"नये मानव और मानस का आविर्भाव,तब वास्तविक और आगृतिक क्रान्ति आयेगी । इसी से हमने "जयहिन्द" की ज़गह "जय जगद" का नारा स्वीकार किया है ।"[39] इसी प्रकार की भावना गौरी के माध्यम से अभिव्यक्त होती है । वह चरखा चलाकर मानवता की रक्षा करना चाहती है । इसके साथ वह मानवता को ध्यान में रखकर एक मुसलमान परिवार की रक्षा भी करती है । "रीछ" उपन्यास का विमल मानवता के नाते गरीब किसानों तथा निम्न वर्ग के लोगों की भलाई व अच्छाई के लिए कर्तव्यनिष्ठ रहता है । "दायरे" का सत्यदेव मानवता तथा मानव धर्म के मूल्यों को महत्व देता है । वह जातिगत, धार्मिक, तथा वर्गगत विचारों से परे असीमित दृष्टि-कोण को अपनाकर संकीर्ण भावनाओं को नष्ट करता है ।"[40] इसी प्रकार सामर्थ्य और सीमा का एलबर्ट किशन मंसूर पूर्णत: मानवतावादी भावनओों से युक्त है । वह मानवतावादी जीवन-मूल्यों का समर्थन करता हुआ कहता है कि,"मैं न हिन्दू हूं, न मुसलमान हूं, न ईसाई हूं । मजहब जहालत की उपज है । मैं सिर्फ एक इन्सान हूं और इन्सानियत का कायल हूं ।"[41] इस प्रकार मानवता के विषय में सोचता हुआ मानव-मानव में समानता के भाव देखता है । वह मानव-मूल्यों की स्थापना पर बल देता है ।

कुछ उपन्यासों में मानवतावाद के विरूद्ध स्थिति भीपरिलक्षित होती है । इसका उदाहरण "लोहे की लाशें" में दिया गया है । एक ओर मानवतावादी जीवन-मूल्यों की बात कही जा रही है तो वहाँ दूसरी ओर व्यक्ति व्यक्ति

का दुश्मन बना हुआ है । और इन्सान-इन्सान से कटता जा रहा है । इस प्रकार "मानवता" विषम स्थिति में जूझ रही है । वैज्ञानिक मूल्यों ने मानव-मन को इतना परिवर्तित कर दिया है कि - "मनुष्य भौतिक प्रगति कर रहा है । विज्ञान का विकास हो रहा है । देश स्वतंत्र हो रहे हैं । मनुष्य एक दूसरे के करीब आ रहे हैं । फिर भी इन्सान इंसान से कटता चला जा रहा है । उसमें अकेलापन बढ़ रहा है । संघर्ष और द्वंद्व उसकी भावना को दबोचे जा रहा है । हर तरफ संघर्ष, हर तरफ द्वंद्व, हर तरफ स्पर्द्धा व्यक्ति का विकास हो रहा है । समाज राष्ट्र या समूह से अपना अलग अस्तित्व बना रहा है ।" इसप्रकार वैज्ञानिक विकास ने व्यक्ति मन को अधिक बौद्धिक बना दिया है । ऐसी विषम स्थिति में भी मानवता, सौहार्द्र, प्रेम, व्यवहार, सदाचार,परोपकार, चरित्र, दया, त्याग, सेवाभाव, कर्तव्य तथा समाजवादी चेतना का अंकन कुछ उपन्यासों में अंकित है ।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि आज के मानव जीवन में अनेक विद्रूपताएँ व विसंगतियाँ आ गयी हैं, जिनके परिणामस्वरूप मानवतावादी विचारधारा कहीं जुड़ते हैं तो कहीं टूटते हैं । फिर भी आज मानवतावादी जीवन-मूल्यों पर बल दिया जा रहा है । दायित्व-बोध, उत्सर्ग, लोकहित, समानता, सेवाभाव, स्वतंत्रता, बंधुत्व आदि शाश्वत मूल्य भी समाज में यत्किंचित वर्तमान हैं । राग दरबारी, आधा गाँव, पत्थरों का शहर, सुबह अँधेरे पथ पर, प्रश्न और मरीचिका, वे दिन, मंजिल से आगे आदि उपन्यासों में नये दृष्टिकोणों के साथ मानवतावादी जीवन मूल्यों का अंकन हुआ है । समाज में जहाँ एक ओर मानवतावादी जीवन-मूल्यों की स्थापना की जा रही है तो वहाँ दूसरी ओर पारिवारिक जीवन-मूल्यों का पतन और नये आयाम भी बन रहे हैं ।

--"पारिवारिक संबंधों का पतन एवं नये आयाम"--

द्वितीय अध्याय में हम यह उल्लेख कर चुके हैं कि पारिवारिक मूल्यों एवं दाम्पत्य जीवन में बदलती हुई परिस्थितियों के कारण परिवर्तन आ रहा

है । आधुनिकता, नगरीकरण, औद्योगीकरण , व्यक्ति चेतना ,यौन चेतना, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियाँ, नारी शिक्षा आदि के कारण पारिवारिक संबंधों में पतन सहज रूप से होने लगा । जिसके कारण पति पत्नी के मध्य मन-मुटाव, तनाव की स्थिति, एवं स्व अस्तित्व की भावना के उत्पन्न होने से पारिवारिक मूल्यों तथा संबंधों में विघटन होने लगा । जिनका चित्रण युगीन उपन्यासों में यथार्थ रूप से किया गया है ।

स्वाधीनता के पश्चात् नारी चेतना, व्यक्ति चेतना एवं यौन चेतना के विकास ने पारिवारिक जीवन-मूल्यों को खतरे में डाल दिया । शहर से गाँव तक के परिवारों के संबंधों में तनाव आया है । व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना के कारण परिवार के प्रति उत्तरदायित्व तथा त्याग की भावना निरन्तर टूटती जा रही है । वैयक्तिक स्वार्थ ने परिवारों के आदर्श, आचरण, सेवा, त्याग, कर्तव्य, प्रेम तथा आपसी रिश्ते को तोड़ दिया है । नारी चेतना ने भी पारि वारिक मान्यताओं, रीतियों, मर्यादाओं तथा भावात्मक संबंधों को ठेस पहुँचाई है । नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाने पर दैहिक पवित्रता तथा परिवार के सदियों के बंधन से तंग आकर, नारी स्वातंत्र्य के मोह में तोड़ रही है । इस कारण पति पत्नी के बीच गहरी खाई उत्पन्न हो गई है ।

आधुनिक परिवार संक्रमण की स्थिति से गुजर रहा है । इसका संगठन, ढाँचा,कार्य, आदर्श, मान्यता तथा व्यवहार में परिवर्तन आ रहा है । पारि-वारिक परिवर्तन का कारण औद्योगीकरण भी है । ग्रामीण लोग रोजी रोटी के लिए शहर आये, नगरी चमक दमक में वे यहाँ की सभ्यता से आकर्षित होकर शहरों में बस गये । औद्योगीकरण ने व्यक्तिवाद का बढ़ावा देकर सामूहिक रूप को नगण्य करने दिया है, नगरीयकरण की प्रक्रिया ने संयुक्त परिवारों के प्राचीन आदर्शों तथा रीतियों को विघटित किया ।

पारिवारिक संबंध के मूल्यों का विघटन व्यक्तिगत ,आर्थिक,राजनैतिक तथा धार्मिक आधार पर हुआ जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है कि पारि - वारिक संबंधों के विघटन में मूल रूप से व्यक्ति चेतना ही काम करती है ।

किन्तु कहीं वह आर्थिक परिवेश में उभर रही है तो कहीं राजनीतिक परिवेश में विकसित हो रही है, और कहीं यौन विकृति के रूप में । इस प्रकार आधुनिक युग में व्यक्ति और परिवार आर्थिक विषमता तथा राजनीतिक वातावरण से टूट रहे हैं । संयुक्त परिवार में बच्चों के व्यक्तित्व का समुचित विकास का आदर्श स्थान है । जहाँ वे आदर्श, सहयोग, प्रेम, सदभाव, शिष्टाचार आदि मूल्यों से परिचित होते हैं । किन्तु परिवार में पति पत्नी के जीवन में मन-मुटाव के कारण "तलाक" दिये जाने से बालक मन पर भी प्रभाव पड़ा । "आपका बंटी" उपन्यास इसका उदाहरण है ।

यौन चेतना के कारण भी पारिवारिक संबंधों में मूल रूप से विकृति आई है । स्वच्छंद यौन वृत्ति को लेकर पति पत्नी के संबंध टूटे, असामजंस्य उत्पन्न हो गया और तनाव उत्पन्न हो जाने से पारिवारिक संबंध विघटन की ओर अग्रसर हैं । तनाव के कारण व्यक्तिगत व्यवहार प्रतिमानों में अन्तर ,यौन संबंधों की पूर्ति में असंतोष ,सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का अभाव, आर्थिक तनाव, निर्धनता, पत्नी की आर्थिक निर्भरता, व्यावसायिक तनाव, अनमेल विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम विवाह, स्नेहाभाव तथा स्थायित्व के अभाव के कारण पारिवारिक जीवन-मूल्यों में परिवर्तन हुआ और नये आयाम बने । व्यक्ति इस तनाव और विघटन के बीच स्व: प्रतिष्ठा के लिए नयी नैतिकता पर बल दे रहा है । स्वार्थ ही उसका मूल्य और मानदण्ड हो गया है । इस मापदण्ड पर वह नैतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिकसंदर्भों से संपृक्त करना चाहता है । "हर स्तर पर व्यक्ति अपनी वैयक्तिकता खोए बिना व्यापक सामाजिक संदर्भों से जुड़ने की निरन्तर चेष्टा करता है । आत्मरति की दृष्टि से वह सामाजिक अनुशासन स्वीकार करता है ? तो परिस्थितियों से विवश होकर विक्षुब्ध, कुंठित, अपमानित ,एवं समाज उपेक्षित होकर वह विद्रोह भी करता है। यह विद्रोह अर्न्तबाह्य दोनों स्तरों पर होता है जो अनेक समस्याओं को जन्म देता है ।"[42] अन्य कारणों से आज के सम्मिलित परिवार टूट रहे हैं जिनकी चर्चा साठोत्तरी उपन्यासों में परिलक्षित है ।

पारिवारिक संबंधों का पतन हमें "माटी की महक" के जमींदार के बेटे गोपी बाबू और मोहन में परिलक्षित है । दोनों भाइयों में भाई भाई का संबंध नहीं परिलक्षित होता, मोहन व्यक्ति चेतना को महत्त्व देकर हवेली की रीति-रिवाज तथा मर्यादाओं को नहीं मानता है जबकि गोपी बाबू हवेली की मर्यादा के विपरीत एक भी कदम नहीं रख सकता है । इन भावनाओं के कारण भाई का रिश्ता टूट रहा है । सामन्ती हवेली में मोहन का दम घुटता है । इसलिए वह गांव त्याग कर शहर चला जाता है । वह व्यावहारिक सत्य को उद्घाटित करता है कि " आंखों पर इज्जत का झूठा पर्दा जब पड़ा रहेगा तब तक सच्चाई की ओर नजर नहीं उठेगी । छोटी छोटी बात भी खानदान की इज्जत को ललकारने वाली सिद्ध होगी ।"[43] आपसी मन मुटाव तथा नयी वैचारिक दृष्टि के कारण वह लम्बे समय तक गांव को छोड़ देता है ,आज के परिवार सामाजिक विसंगतियों और नई मानसिक वैचारिकता के कारण परिवारों के संबंध बुरी तरह से टूट रहे हैं ।

आर्थिक विसंगति व विषमता के कारण "यह पथ बंधु था" के श्रीधर का परिवार बुरी तरह से टूट जाता है । इसमें भारतीय पारिवारिक जीवन की विश्रृंखलता, जर्जरता, विकृति, करूणा, अपमान तथा अमानवीयता के चित्र प्रस्तुत हैं । कीर्तिनियां का एक पुत्र श्रीधर चला जाता है तो उसका बड़ा पुत्र जो कमाऊ है , वह परिवार से अलग हो जाता है । इससे सम्मिलित पारिवारिक संबंधों तथा प्रतिष्ठा को बड़ी भारी ठेस लगती है । अन्तर्विरोधों सहित मानवीय संवेदनशीलता का चित्रण पिता की व्यग्रता में मिलता है । "अब दुनिया भर के यह छल प्रपंच मेरी तो समझ में नहीं आते । होगा जिसे रहना हो रहे । नाक भौं सिकोड़ कर किसी को रहने की जरूरत नहीं । जहां सींग समाए वहीं जाए किसी को यह घर पसंद नहीं, किसी यहां देहात ।"[44]

-"अमृत और विष" के रमेश और रानी सामाजिक मूल्यों तथा मान्यताओं को महत्त्व न देकर अन्तर्जातीय विवाह कर लेते हैं तो ठाकुर रद्ध सिंह और पुति पंडित में झगड़ा होता है । पिता पुत्ति रमेश की ऐसी अमान्य साहस को

देखकर उसे हार्दिक दुख होता । पिता पुत्र का संबंध परिवार से टूट जाता है । ठाकुर से उसकी पुत्री का संबंध टूट जाता है । पुत्ति की मानसिक स्थिति का चित्रण है । "रमेश की माँ का कलेजा यह बात सुनकर काठ हो गया । कुछ क्षणों के लिए पति पत्नी के बीच में गहरा घुटन भरा सन्नाटा छा गया ।"[45] दूसरी ओर ठाकुर रद्दू सिंह रानी के अपने आप शादी करती है तो उसे चुनौतियां मिलती हैं । "अभी तुम्हारी लड़की जो इस तरह से तुमको ठेंगा दिखा के ब्याह करती है"[46] दोनों परिवार में कटुता उत्पन्न हो जाती है । यहाँ सामाजिक तथा पारिवारिक मान,प्रतिष्ठा तथा मर्यादा को ठेस लगती है ।

प्रश्न और मरीचिका की सुरैया और उदय समस्त जातिगत धर्मगत तथा वर्ण भेदभाव को तोड़कर अन्तर्जातीय विवाह की असफल चेष्टा करते हैं । इससे परिवार में तनाव और घुटन भर जाता है । "परिवार कुल जाति धर्म ये सब सामाजिक इकाईयाँ हैं.... विवाह मैंने व्यक्तिगत फैसला समझा था जबकि सामाजिक फैसला है ।"[47] इस व्यक्ति स्वातंत्र तथा नारी चेतना के कारण परिवार के संबंध विघटित हुए । यौन की असंतुष्टि के कारण परिवार भास्कर मोती, बदर में टूटते हुए दिखाई देते हैं । बदर और अवस्थी की लव मैरिज होती है । किन्तु बदर का शारीरिक संबंध दूसरों के साथ रहता है । वह भास्कर से कहती है ।"जिसने कट्टर परिवार और खूंख्यार बिरादरी की कत्ल की, इन धमिकियों की परवाह उसे थी, उस ब्राह्मण से क्या दबती ।"[48] बदर समाज के लिए एक चुनौती है ।

यौन चेतना ने पारिवारिक मूल्यों की आत्मा को झकझोर दिया है । साथ ही आज का व्यक्ति फैशनपरस्त हो गया है और शहरी सभ्यता के संक्रमण तथा जीवन-मूल्यों के टूटने से आज समाज में यौन संबंधी नैतिकता के नये प्रतिमान बन रहे हैं । शहर और गाँव में नवयुवक तथा नवयुवतियों में अपरिपक्व आयु में यौनाचार की भावना विकसित होने से परिवार टूट रहे हैं, और पारिवारिक जीवन-मूल्य टूट रहे हैं । वे उत्तेजित होकर जातीय अन्तर्जातीय स्वच्छंद प्रेम भावना से भर जाते हैं । इससे परिवार की प्रतिष्ठा, उसकी मर्यादा तथा मान

को ठेस लगती है । यही कारण है कि इस भावना ने सम्मिलित परिवार के जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया । "डाक बंगला" की नारी विधवा होने पर शारीरिक अन्य पुरूषों से रखती वह परिवार तथा समाज की मान्यताओं, आदर्शों तथा धारणाओं को नकारती है ।

यौन चेतना व्यक्ति स्वातंत्र्य के साथ साथ चलती है । "वे दिन" में कोई पारिवारिक संबंध नहीं । न पुत्र संबंध, न पति पत्नी का संबंध । उसके पात्र खोखले जीवन, आदर्शहीनता, मूल्यहीनता की ओर संकेत करते हैं । फ्रांज और मारिया का दाम्पत्य जीवन में परिवार का महत्व कहां, और ऋतुचक्र की पत्नी अपने पति के दुर्बलता के कारण पारिवारिक तनाव रहता है । अनंतर का पति आदित्य अपनी पत्नी को आधुनिक बनाना चाहता है । किन्तु वह आधुनिक नहीं बन पाती केवल गृह लक्ष्मी ही रहती तो इसपर परिवार में तनाव रहता है । उसका पति भारतीय आदर्श तथा मान्यताओं को नहीं मानता है । यौन चेतना से प्रेरित सुरजीत कौर और तारक दोनों परिवार के मूल्यों, आदर्शों तथा नैतिक नियमों को तोड़कर भाग जाते हैं । तो समाज के लोग उन्हें वापिस आने पर अनेक बात कहते है ।"49

परिवार के विघटन में नारी की स्वातंत्र्य चेतना का विशेष हाथ रहा है । नीलिमा और हरबंश का परिवार में तनाव बने रहने से दोनों अपरिचित तथा अकेले रहते हैं । एक पत्र में हरवंश लिखता है कि "हम दोनों साथ साथ रह कर सुखी ~~व~~/ही रह सकते है मगर अपने देश में रहते हुए एक सामाजिक परिस्थिति मुझे तुम्हारे साथ रहने को मजबूर कर रही थी ।"50

परिवारों में माता पिता तथा पुत्र का स्नेह तथा कर्त्तव्यपूर्ण संबंध था, आज वह टूट रहा है । "एक सम्मिलित कुटुम्ब सिद्धांत का महात्म था, आज उससे हमारे समाज के अधिकाधिक व्यक्तियों को घुटन महसूस होती है ।"51 देव प्रकाश बदलते हुए गांव के मौहल को देखकर कहता है उन परिवारों में पहले जैसा उत्साह,प्रेम, भाई चारा, अपनात्व सभी समाप्त हो गया है । प्रकृति में सब वैसा ही है लेकिन लोग कितने बदल गये हैं न फाल्गुन की मस्ती है ,न राग

रंग है न भाईचारा है ।"[52] युगीन संदर्भ में माता पिता और संतान का संबंध बदल रहा है । प्राचीन काल में जहाँ पितृभक्ति को महत्त्व दिया जाता था, आज नहीं । "खून का रिश्ता पानी हो रहा है और पानी का रिश्ता खून हो रहा है ।"[53]

आज के परिवेश में कुटुम्बों में विकासमान अवांछनीय प्रवृत्तियाँ भी उपन्यासों में भी अंकित हुई हैं । "सुबह अँधेरे पथ पर" के मीरा और राजेन्द्र बहन-भाई होते हुए विवाह करने को उद्यत हैं । वे इस शाश्वत संबंध को नहीं मानते हैं । मीरा इसी परिवेश में राजेन्द्र से कहती है -"हमारी पीढ़ी की विजय होगी । समाज हमारा दास है ,हम समाज के नहीं'....।"[54] और आगे कहती है "जिनसे हम न माने वे संबंध झूठे हैं"[55] इसी प्रकार पारिवारिक मार्यादाएँ और शिष्टाचार भी विकृत अवस्था में देखजा सकते हैं । आधा गाँव की कम्मो पिता के प्रति विद्रोह करती है । कम्मो अपने पिता को मारता है ।"[56] रूप्पन भी अपने पिता से नहीं डरता है । वह कहता है "पिताजी क्या खाकर नाराज़ होंगे, उनसे कहो, मुझसे सीधे बात तो करले"[57] राधिका अपने पिता की बिना आज्ञा डैन से शादी करके विदेश चली जाती है । रति अपने पिता से कहती है कि वे बढ़िया गये हैं ।

अतः स्पष्ट है कि पारिवारिक संबंधों में विकृतियाँ के आ जाने के कारण उनका पतन हुआ । उनके आदर्श, त्याग, स्नेह, सेवा, दायित्व आदि की मधुरता कटुता में भर गयी । आर्थिक,राजनैतिक, व्यक्तिगत काम आदि के आधार पर परिवार टूटने लगे । धर्म और नैतिक मूल्यों से संचालित काम आज शारीरिक आवश्यकता के रूप में मान्य हो गया है । "नाच्यौ बहुत गोपाल" अपने अपने लोग, पानी के प्राचीर, 'जल टूटता हुआ', 'यात्राएँ', 'सफेद मेमने', 'एक पति के नोटस', 'मित्रोमरजानी', 'टूटती इकाईयाँ', टूटती हुई सीमाएँ, उसका घर सूरजमुखी अँधेरेके, आदि उपन्यासों में टूटते हुए परिवार के संबंधों का चित्रण मिलता है । आज सामाजिक मर्यादाओं तथा रीतियों व नीतियों के विरुद्ध अविवाहित परिवार भी बन रहे हैं। 'बीमार शहर' में विवाह हीन मातृत्व की चर्चा है।

आधुनिक युग में जहाँ एक ओर प्राचीन पारिवारिक मूल्य टूट रहे हैं,

वहीं दूसरी ओर नये दृष्टिकोण भी पनप रहे हैं । पति पत्नी एक दूसरे को आत्मिक संबंधों को त्यागकर भौतिक धरातल पर, सहयोग दे रहे हैं । "पत्थरों का शहर" का मनोज अपनी पत्नी तृप्ता को पेंटिंग्स करने के लिए प्रेरित करता है, तत्पश्चात् तृप्ता कल्चर सेक्रेटरी के साथ शराब पीने, उसके साथ नाचने और तृप्ता का हाथ अपने कन्धों पर लेने से परिवार मर्यादा तथा कुल मान्यताओं के तोड़ने के कारण मनमुटाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । इसका दुष्परिणाम होता है कि तलाक । इसी प्रकार "दो एकान्त" में वारीरा और उसके पति में यही स्थिति सामने आती है । "न आने वाला कल" में भी ऐसा होता है । राज - नीतिक परिवेश के कारण उपन्यास "काली आंधी" में जगदीश और मालती का पारिवारिक जीवन अनेक विसंगतियों का शिकार बन जाता है । वह मालती को राजनीति में आने के लिए प्रोत्साहित करता है, किन्तु तत्पश्चात् उन दोनों के जीवन में मनमुटाव की स्थिति आ जाती है । "अंधेरे बंद कमरे" में भी यही परिवेश सामने आता है । पाश्चात्य प्रभाव तथा शिक्षा के कारण पति पत्नी एक दूसरे के प्रति सामंजस्य की भावना तो रखते हैं किन्तु अंहभाव एवं स्व अस्तित्व के कारण सफल नहीं हो पाते हैं । रूकोगी नहीं राधिका में डेनिल विदेशी पत्रकार राधिका को निर्मुक्त भाव से त्याग देता ह- "तुम्हें तो नयी तरह से एडजस्ट करने में समय लगेगा मैं तो स्वतंत्र व्यक्ति हूं ।"[58] आज स्थिति यहां तक आ गयी है कि आधुनिक पति शिक्षिता एवं सुन्दर पत्नी के कारण धन तथा पद प्राप्त करना चाहता है । रूपया कमाना तथा पदोन्नति का साधन मानता है, इसे अनैतिक नहीं मानता है । "प्रश्न और मरीचिका" का मेजर अजीत सिंह अपनी पत्नी को फिल्म हीरोइन बनाकर तथा अनैतिक कार्य करा कर धन प्राप्त करता है ।"[59] यही स्थिति "उसका घर" उपन्यास में एलमा का भाई अपनी बहिन को आहूजा अपने बॉस की अंकशायिनी बनने पर मजबूर करता है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि युगीन परिवेश में पति पत्नी, भाई हिन आदि के संबंध तथा मूल्य धूमिल हो रहे हैं । और उनके स्थान पर नवीन दृष्टिकोण पनप रहे हैं तथा नये आयाम बन रहे हैं ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक संबंधों का पतन व्यक्ति चेतना के कारण हुआ है । सन् 1960 के पश्चात् नारी

स्वातंत्र्य की भावना इतनी बलवती होती जा रही है कि वह अपने अंह भाव तथा अस्तित्व को भली भाँति पहचानने लगी है । यही नहीं शिक्षा और औद्योगीकरण ने व्यक्ति को गाँव से लेकर शहरों तक प्रभावित किया है । आर्थिक अभाव की पूर्ति करने के लिए माता-पिता सुबह से शाम तक कार्य व्यस्त रहते हैं । ऑफिसों, कल कारखानों तथा फैक्टरियों में काम करने वाले पति पत्नी समुचित रूप से बच्चों को स्नेह नहीं दे पाते हैं । इस स्नेहाभाव के कारण भी परिवार टूट रहे हैं । व्यक्ति "व्यक्तिवाद" की सीमित इकाईयों में फँसता जा रहा है । सामूहिक जीवन को नगण्य समझता हुआ आत्मरति की ओर अग्रसर है । इससे पारिवारिक जीवन-मूल्य टूटे ।

यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि स्त्री-पुरूष के दफ्तरों या कल - कारखानों में कार्य करने से स्वच्छंद यौन वृत्ति तीव्रतर होने लगी । वे सामाजिक तथा नैतिक जीवन-मूल्यों को नगण्य ठहराकर,समकालीन परिवेश में आत्मसात् भी कर रहे हैं । परिणामस्वरूप स्त्री-पुरूष के पारिवारिक संबंधों में कटुता आने लगी । इस प्रकार पारिकवारिक मर्यादाओं और शिष्टाचार आदि में विकृति आ रही है । इन समस्त बदलती हुई परिस्थितियों का चित्रण युगीन उपन्यासों में किया गया है । यह कहना उपयुक्त होगा कि जहाँ एक ओर पारिवारिक जीवन मूल्यों का पतन तो रहा है तो दूसरी ओर शिक्षा वैज्ञानिक प्रगति ,शहरीकरण व औद्योगीकरण के कारण इनके नये आयाम भी बन रहे हैं । व्यक्ति गाँव की संकीर्ण भूमि को त्याग, शहरी परिवेश में आने से उसकी जातिगत बंधन ढीले होने लगे, उसका नया संबंध भी बनने लगा । वह धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग की भावना को भी नगण्य स्वीकारता हुआ स्वतंत्र विचार रख रहा है ।

अतःयह कहना समुचित होगा कि पारिवारिक संबंधों तथा मूल्यों के विघटन में मूल रूप व्यक्ति चेतना ही है । यह स्वच्छंद यौन के रूप में व आर्थिक, राजनीतिक आदि परिस्थितियों में विकसित हो रही है । इससे अन्तर्जातीय विवाह, कम संतान भावना, भाई चार,प्रेम, स्नेह, कर्त्तव्य आदि की प्रवृत्ति

बनती हुई प्रतीत होती है और कहीं इनको नकारा गया है । इनके साथसाथ उपन्यासों में पारिवारिक संबधों के नये आयाम प्रस्तुत हुए तथा इन संबंधों के पतन के साथसाथ सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति नये दृष्टिकोण भी पनप रहे हैं ।

"सामाजिक रीति रिवाजों के प्रति नये दृष्टिकोण"

पूर्ववर्ती विवेचन के अन्तर्गत यह लक्ष्य किया जा चुका है कि भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही धार्मिक एवं सामाजिक लोक विश्वासों तथा लोकाचारों के साथ साथ धर्माडम्बरों ,पीर पैगम्बरों, देवी देवताओं आदि को महत्व दिया जाता रहा है । ग्रामीण जीवन का सामान्य कार्यों को भी लोक विश्वासों, शकुन, अपशकुन, मुहूर्त्त आदि से आरम्भ किया जाता था । शनैः शनैः शिक्षा और विज्ञान के प्रभाव के कारण ये धारणायें व मान्यताएं परिवर्तित हो रही हैं । इस बदलते हुए दृष्टिकोणों को उपन्यासों के संदर्भ में विवेचन करेंगे :-

प्राचीन भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की सामाजिक रीति रिवाजों धार्मिक, परम्पराओं, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों में तीव्र गति से परिवर्तन आ रहा है । परिणाम स्वरूप जीवन-मूल्य भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके । आधुनिकता के संदर्भ में व्यक्ति स्वातंत्र्य को विशेष महत्व दिया जाने लगा । अतः आज वह रीति-रिवाजों, धर्माडम्बरों और प्राचीन सामाजिक, कठोर बंधनों से त्राण पाने के लिए व्यक्ति का इनके प्रति नया दृष्टिकोण बनने लगा है । साथ ही बौद्धिक विकास ने इनके विषय में सोचने को विवश कर दिया । समाज में फैले धार्मिक शोषण, अनाचार, व्यभिचार, अकर्मण्यता और अंधविश्वास के प्रति जागृति के स्वर उठने लगे । रूढ़ियों ने सामाजिक जीवन को आक्रान्त कर दिया, वह आज के युग में धर्म का अमानुषिक शोषण, श्राद्ध,तीर्थ, व्रत, पंडा-पुजारी,पुरोहित वर्ग की स्वार्थपरता एवं पाखण्डपूर्ण मान्यताओं तथा रीति-रिवाजों- नीतियों की कड़ी आलोचना होने लगी । नया धर्म तथा नैतिकता समाज में स्थापित हो गयी ।

यह निर्दिष्ट किया जा सकता है कि सामाजिक रीति रिवाज, नीतियाँ तथा परम्पराएँ व्यक्ति की वैचारिक शक्ति तथा नयी मानसिकता से जुड़ने से परिवर्तन आना स्वाभाविक है । बदलते हुए युग में सामाजिक तथा धार्मिक रीति रिवाजों के प्रति लोगों का विश्वास सा उठने लगा । विवाह के समय शिशु जन्म के समय तथा अन्य रीति नीतियाँ समाज से कुछ छूटती जा रही हैं और कुछ अभी तक समाज में अवशिष्ट हैं । इसलिए यह कहना समीचीन होगा कि वैज्ञानिक तथा शिक्षा के प्रसार के साथ साथ व्यक्ति अधिक बौद्धिक होने लगा है फिर भी, रीति रिवाज, संस्कार, धर्म, जाति, समूह, वर्ग आदि के समाजिक कार्य-कलापों, व्यवहारों तथा आचार विचारों में परिवर्तन होने में प्राय: व्यापक समय लगता है जबकि किसी भी समाज की सभ्यता का दौर, जैसे - खान-पान, रहन-सहन, पहनाव, आचरण, तथा फैशन में तीव्रतर बदलाव हो जाता है । आज के भौतिकवादी युग में मूल्य परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र गति से गुजर रही है । समकालीन उपन्यासों में इस सामाजिक परिवर्तन का संश्लिष्ट चित्रण प्राप्त होता है । बदलते हुए सामाजिक परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति, परिवार, विवाह, संबंध, यौन चेतना, नारी चेतना, प्रेम आदि का विवेचन पूर्ववर्ती पृष्ठों में कर चुके हैं । यहां पर हम परम्परागत रीति-रिवाजों के प्रति व्यक्ति के बदलते हुए दृष्टिकोणों का चित्रण प्रस्तुत करेंगे :-

उपन्यासों में आये हुए संदर्भ के अनुसार आज गांव के रीति रिवाज़ तथा सामाजिक प्रथाएं सभी तो टूटरही हैं । " आखिरी आवाज़" की निहाल कौर की मां उसे बिना गौना किये ही ससुराल भेज देती है । गौन की प्रथा सामाजिक रीति रिवाज मानी जाती रही है । वह पुरानी सामाजिक ~~ककिसल~~ रीति-रिवाजों की चिन्ता नहीं करती है । साथ ही गांव की स्त्रियां निहाल कौर की चरित्रहीनता पर उंगली उठाती हुई कहती हैं, "अब तो बच्चा होगा तो उसी का कहलाएगा ।"[60] इसी प्रकार "प्रश्न और मरीचिका" के लता, उदय तथा सुरैया नकारते हैं । उसका घर की रेश्मा बोल्ड लड़की है । वह सामाजिक रीति नीतियों को महत्व नहीं देती है ।

मध्यकालीन से चले आ रहे धार्मिक तथा सामाजिक अंधविश्वास युगीन परिवेश में टूट रहे हैं । आधुनिक शिक्षा ने ग्रामीण लोगों के सांस्कृतिक जीवन में भी परिवर्तन ला दिया है । गांव के सांस्कृतिक अवसरों पर युवा वर्ग का कोई उत्साह नहीं रह गया । शनैः शनैः उनकी रीति नीतियाँ लुप्त हो जा रही हैं । सतीश इस परिवर्तन को इसप्रकार अभिव्यक्त करता है -" अब तो बच्चे बाहरी स्कूलों में पढ़ लिखने के नाते इन खेलों को गवारू चीज़ समझते, शहरी नकल करते हैं किन्तु यह गांव के छोकड़े न देहात के काम के रह पाते और न शहर के ढंग सीख पाते हैं .... यहाँ तक कि पड़ौसियों के यहाँ पड़ने वाले शादी ब्याह या सामाजिक त्योहारों के दिन भी उनमें कोई उमंग नहीं आती है । जी खोल कर गा नहीं पाते, मिल नहीं पाते, जैसे इन्हें वे फालतू चीज़ समझते हैं ।"[61] गांव के लोग रीति रिवाजों से ऊबते जा रहे हैं । हमारे प्राचीन संस्कार आज के परिवेश में आकर अस्त व्यस्त हो रहे हैं । इसीप्रकार "सूखते हुए तालब" में रामा तालाब के माध्यम से गांव की मूल्यवत्ता तथा अलगाव का अंकन किया गया है । "गांव के सारे धार्मिक कार्य इसी के तट पर सम्पन्न होते रहे, कथावार्त्ता, मनौतियाँ, यहीं पूरी होती थीं । शादी ब्याह, जनेऊ, मुण्डन, ग्रहण और पर्वों के अवसर पर यही न होता हो, इसी के तट पर बगीचे में बरातें टिकती हैं । यहाँ गांव के लोग धार्मिक और सामाजिक रीति रिवाज सम्पन्न करते, किन्तु देवप्रकाश ने देखा..... एक आदमी उस तट पर आअदस्त ले रहा था ।"[62] चिड़ियाघर की रिजवी परम्परागत जीवन-मूल्य, मान्यताएं, प्रथाएँ तथा रीति रिवाजों को निरर्थक सिद्ध करती हैं । वह विवाहित है किन्तु अधिक पति बनाने की अभिलाषा में है । "क्यों जौहरी अगर मैं एक एक्सपेरीमेंटकरूं ? चार शौहर रखूं "[63] इसप्रकार युवा वर्ग परम्परागत रीति रिवाज तथा मान्यताओं के प्रति विद्रोह कर रहा है ।

आज समाज कितना दोषपूर्ण हो गया है । वैवाहिक रस्म को पूरा करने के लिए दहेज की प्रथा या रीति रिवाज चली आ रही है । राजेन्द्र सामाजिक दहेज प्रथा के प्रति आक्रोशित होता है । "दहेज मांगने वाले कसाई है साहब कसाई । अब आजादी मिलने वाली है । राष्ट्रीय सरकार को पहला

कानून यही बनाना चाहिये कि दहेज माँगने वालों को गोली से उड़ा दिया जाए"[64] तृप्ता नारी चेतना का प्रतीक है । वह पारिवारिक तथा सामाजिक रीति-रिवाज, धर्म, मर्यादा तथा नैतिकता को अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति में हवन कर डालती है । अपने पति से "तालक" लेकर आजाद होकर, विवेक से कहती है --"हम परम्परा और रूढ़ियों को तोड़ने का दम्भ भरते हैं । ये सब आधुनिक के जार्गन हैं, जिन्होंने हमारा बेड़ा गर्क कर रखा है ।"[65]

"राग दरबारी" का रूप्पन टूटते हुए सामाजिक रीति रिवाज़ को देख कर कुंठित होता है । उसके गांव में निम्न जाति उसके परिवार या ब्राह्मण परिवार के लिए "पाय लागी महाराज" कहा जाने की शिष्टाचार की परम्परा चली आ रही थी किन्तु आज उसके प्रति नये दृष्टिकोण उभर रहे हैं । "चमरही के बीच से वैद्य जी या उनके परिवार के किसी भी व्यक्ति का निकलना एक घटना के रूप में शुमार किया जाता था । एक जमाना था कि किसी भी बाँभन ठाकुर के निकलने पर वहाँ के लोग अपने दरवाजे पर उठकर खड़े हो जाते थे... मर्द हाथ जोड़कर "पाय लागी महाराज" का नारा लगाते थे ... और महाराज चारों ओर आशीर्वाद लुटाते हुए और इस बात ~~केमुककबले~~ की पड़ताल करते हुए कि पिछले चार महीनों में किसकी लड़की पहले के मुकाबले जवान दिखने लगी और कौन लड़की ससुराल से वापिस आ गयी है ।"[66] टूटती हुई रीति रिवाज का चित्र व्यंग्य के साथ प्रस्तुत किया है ।

अतः आज के बदलते हुए युग संदर्भ में सामाजिक रीति रिवाज़ बदल रही हैं । शादी ब्याह, गृह निर्माण, बाल कटवाना, जनेऊ संस्कार, मुहूर्त्त, आदि लोक विश्वास तथा रूढ़ सत्य के प्रति विचार बदल रहे हैं । किन्तु आज भी समाज में ये रीतियां किसी न किसी रूप में विद्यमान भी हैं या कह सकते हैं कि इन रीति रिवाजों को परिष्कृत रूप में देखा जाने लगा है । प्रश्न और मरीचिका, अलग अलग वैतरणी, सहाचारिणी, आपका बंटी, सफेद मेमने, उसका शहर, उसका घर, कन्दील और कुंहासे, अपने अपने लोग, नाच्यौ बहुत गोपाल, डाक बंगला, टोपी शुक्ला, सामर्थ्य और सीमा, उग्रतारा

आदि उपन्यासों में सामाजिक रीति रिवाजों के प्रति नये दृष्टिकोण तथा बौद्धिकता का चित्रण मिलता है । समाज में नये प्रतिमानों के उभरने के कारण भी रीति-रिवाजों तथा रूढ़ियों पर प्रभाव पड़ा जिनका अंकन आज के उपन्यासों में मिलता है ।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा ,बौद्धिक चेतना तथा विज्ञान के कारण परम्परागत रीति नीति मान्यताओं तथा लोक विश्वासों के प्रति विद्रोह चेतना दृष्टिगोचर होती है । व्यक्ति पश्चिमी सभ्यता तथा संस्कृति के मोह में जाति धर्म, कर्म आदि को भूलता जा रहा है । किन्तु गांव का व्यक्ति अशिक्षा,अज्ञान,अंधविश्वास के कारण रूढ़ि परम्पराओं से चिपका तो हुआ है किन्तु नये नये साधनों के साथ नयी नयी वैचारिकता के कारण परिवर्तन की ओर गतिशील हो रहा है । फिर भी पूरी तरह से प्राचीन रीति रिवाजों, मान्यताओं एवं धारणाओं के प्रति मोह भंग नहीं हो पाया है । आज भी व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक कुछ संस्कार बने हुए हैं । जैसे नामकरण संस्कार, विवाह, जनेऊ और अन्त्येष्टि संस्कार आदि । उपन्यास के पुरानी पीढ़ी के पात्र, यथा - "अमृत और विष" का ठाकुर रूद्र सिंह, "सूखता हुआ तालाब" शिवलाल, श्यामदेव मोती लाल बनारसी आदि पात्र भूत प्रेत एवं अंध विश्वासों के प्रतिमान हैं । "जल टूटता हुआ" का वंशी सामाजिक तथा धार्मिक रीति नीतियों को महत्त्व देता है । यह कहा जा सकता है कि बदलते हुए परिवेश में सामाजिक रीति रिवाज व जाति व्यवस्था कहीं मान्य हैं, कहीं अमान्य हैं । आज जाति व्यवस्था,वर्ग-संघर्ष का रूप धारण भी कर रही है ।

"जाति व्यवस्था के प्रति नया दृष्टिकोण"

द्वितीय अध्याय में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि औद्योगीकरण शिक्षा, शहरीकरण, मशीनीकरण आदि के कारण जाति व्यवस्था के प्रति नये दृष्टिकोण बने । इसके अतिरिक्त जातिगत समानता के लिए सरकार द्वारा अस्पृश्यता आरक्षण आदि की व्यवस्था की गई । इसी कारण भारतीय समाज

में युगीन परिवेश में जातिगत भावना टूटती हुई परिलक्षित है । रोजी रोटी की तलाश में ग्रामीण किसान शहर आकर रहने लगा और आवास समस्या, होटलों में खाना पीना, साथ साथ कल कारखानों में कार्य करने से मध्यकालीन से चली आ रही जाति व्यवस्था के बंधन शिथिल पड़ने लगे । इस तज्जनित जातिगत नये दृष्टिकोण से परम्परागत मान्यताऐं एवं नैतिक मूल्य टूटरहे हैं । प्राचीन मूल्यों के स्थानों पर युगानुकूल नये मूल्य स्थापित हो रहे हैं । इस नयी स्थापना में नये मूल्य नये आदर्श और नये समाज के बनते बिगड़ते चित्रों को समकालीन उपन्यासों में प्रस्तुत किया है जिनका विवेचन इस प्रकार है:-

जाति व्यवस्था के प्रति नये दृष्टिकोण आज के उपन्यासों में अनेक जटिलताओं के साथ वर्णित किया गया है । भगवती चरण वर्मा कृत "प्रश्न और मरीचिका" में सेक्स के साथ जातिगत व्यवस्था का प्रश्न भी उठाया है । उपन्यास का नायक उदय हिन्दू और मुसलमान की जातिगत भावना को छोड़ कर परम्परागत धर्म और जाति को नकारता है । वह धर्म और जाति को सड़ांध की संज्ञा देता है ।[67] उदय के अतिरिक्त सुरैया लता, अजनीकुमार, मंजीत ,प्रेमनाथ मदान आदि ऐसे पात्र हैं, जो जातीयता के बंधन को नहीं स्वीकारते हैं । पूर्व वर्त्ती विवेचन में कह चुके हैं । व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना ने जाति व्यवस्था के बंधन शिथिल किये हैं । आज के युग में अन्तर्जातीयता के विवाह ने जातीयता के नये आयाम प्रदान किये । शिक्षित समाज में विजातीय वैवाहिक संबंध बढ़ रहे हैं । अमृत और विष का शिक्षित रमेश, वह ब्राह्मण है । ठाकुर की बाल विधवा रानी से विवाह करके पुरानी मान्यताओं और आदर्शों को तोड़ता है । "हमें तब कौन रोक सकता है , अब तो कितने ही प्रेम विवाह होने लगे हैं । विधवा विवाह भी होने लगे ।"[68]

"नाच्यौ बहुत गोपाल" की ब्रह्मण परिवार की निर्गुनियां काम वासना के वशीभूत हो, भंगी जाति के ऊपरी भेदभाव को नकारती हुई, मेहत्तर मोहन से शारीरिक संबंध स्थापित करके विवाह कर लेती है । मोहन उसे अपने हाथों से कौर खिलाता है, सूअर का मांस पकवाता है , उसका स्पर्श करता है ।

निर्गुनियाँ को इस स्पर्श में जीवन का सच्चा आनन्द मिलता है । "उसके सारे संस्कार और जाति-बंधन के विचार टूटने लगे ।"[69] जाति व्यवस्था के प्रति मोहन को घृणा होती है । और यह घृणा तब और भी तीव्रतर हो उठती है जब उसे यह पता लगता है कि वह ठाकुर की अवैध सन्तान है । वह निर्गुनियाँ से कहता है -"मैं ठाकुर की औलाद हूं, तब मुझे भी नफरत होती है कि दूसरे का मैल क्यों साफ करूं -फिर सोचता हूं कि वो, ब्राह्मन, ठाकुर ऊँची जाति के लोग ही साले हरामी हैं ।"[70]

मध्य काल से दलित व नीच समझी जाने वाली जाति को आज सहानुभूति की दृष्टि से देखा जा रहा है । "धरती मेरा घर" का कृष्ण कहता है - "शर्मा साहब जिन्हें नीच कहा जाता है वह नीच क्यों है ? क्या आप उन्हें सचमुच नीच समझते हैं "[71] यद्यपि अधिकांश युगीन उपन्यासों में जाति व्यवस्था के प्रति नये दृष्टिकोण परिलक्षित हैं, तथापि जातिगत भावना कहीं कहीं परिलक्षित है । "टोपी शुक्ला" का बालक टोपी कहता है - हम लोग मियाँ लोगन का छुआ न खाते ।"[72] यहि ताकमगत भावना नरेश मेहता कृत "उत्तर कथा" के ब्राह्मण परिवार में दृष्टिगोचर है । "पत्थरों का शहर" में भी जातिवादी भावना परिलक्षित है । विवेक नौकरी के लिए मुसलमान अफसर के पास जाता है , लेकिन नौकरी मुसलमान को ही मिलती है । "[73]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समकालीन उपन्यासों में जाति व्यवस्था अधिकांशत: टूटती हुई दृष्टिगोचर है । शिक्षित नई पीढ़ी के पात्र जातिगत बंधन को तोड़कर उसके प्रति नया दृष्टिकोण अपनाये हुए हैं । परम्परागत सजातिय विवाह प्रणाली भी अब अन्तर्जातीय विवाह के रूप में परिणत होती जा रही है । किन्तु कुछ उपन्यास जाति व्यवस्था के न्यूनतम अँश लिये हुए हैं । इस प्रकार कहा जा सकता है कि युगीन परिवेश में जातिगत मूल्य कुछ अवशिष्ट हैं तो कुछ टूटते जा रहे हैं ।

"सामाजिक वर्गों के नये प्रतिमान"

द्वितीय अध्याय में हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि "अर्थ" के कारण समाज में विभिन्न वर्गों ने जन्म लिया । प्राचीनकाल में जो जाति व्यवस्था स्थापित थी, आधुनिक युग में उसने "वर्ग व्यवस्था" का रूप धारण कर लिया । राजनीति ने इन वर्गों को अत्याधिक प्रभावित किया । नेतागण निम्न वर्ग एवं मजदूर और श्रमिक वर्ग के उत्थान के नाम पर नित्य प्रति संघर्ष को बढ़ावा दे रहा है । तथा समाज को वर्गहीन (समाजवाद) बनाने के नाम पर कई वर्गों में विभक्त कर रहा है । इस प्रकार इस वर्ग चेतना ने आधुनिक जीवन को विविध पक्षों से प्रभावित किया है । तथा नैतिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों के प्रति नया दृष्टिकोण उभारने पर विवश किया है । समकालीन उपन्यासों में इस संदर्भ में बहुत कुछ वर्णित किया जा चुका है । यहाँ हम उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में वर्ग चेतना तथा उसके नये प्रतिमानों का विवेचन प्रस्तुत करेंगे ।

समाज में पूंजीवादी वर्ग नेता वर्ग मजदूर वर्ग किसान वर्ग, और जीवन स्तर के आधार पर उच्च वर्ग मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग आदि वर्ग उभर रहे हैं । उनके सतत: संघर्ष ने जीवन मूल्यों को परिवर्तन की दिशा में मोड़ दिया है । मोहन और विमल पूंजीवादी वर्ग से संघर्षरत हैं । पहले सामन्तीवर्ग जनता पर राज्य करता था और अब शोषक वर्ग "राजा महाराजा, मालगुजार जमींदार, अंग्रेज़ आदि तो चले गये परन्तु उनकी जगह नया शोषक वर्ग उठ खड़ा हुआ है ।"[74] शहरों में वर्ग चेतना सतत: बढ़ती ही जा रही है । मध्य वर्ग और उच्च वर्ग के बीच की खाई दिनोंदिन गहरी होती जा रही है । उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग के व्यक्ति से घृणा करता है । जबकि मध्य वर्ग बुद्धिवादी वर्ग होने के कारण उच्च वर्ग के समकक्ष आना चाहता है । विडम्बना यह है कि मध्यम वर्ग उच्च वर्ग में अपने वैवाहिक संबंध बनाने के लिए अधिक धन व्यय करता है और झूठी शान शौकत का दिखावा करता है । किन्तु असफल होने पर कुण्ठाग्रस्त हो जाता है । मध्य वर्गीय रमेश अपनी बहिन की शादी उच्च वर्ग में करने को लालायित है । किन्तु उनके समकक्ष न आने पर

कहता है -"कैपीटलिस्टों के काम्पिटीशन में हम जैसों की मट्टी पलीद हो गयी है।"[75]

समाज में आज व्यक्ति जातिगत तथा अर्थगत आधार पर उच्च वर्ग का माना जाता है। चौदह फेरे का निम्न वर्ग का ग्रामीण शिवदत्त व्यापार करके लखपति बन जाता है। कलकत्ता के उच्च वर्ग में उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है किन्तु उसके गरीब भाई बहिन गाँव में रहते हैं। उनके प्रति सद्भाव, सहानुभूति कहाँ ? भौतिकवादी युग में अर्थगत आधार पर उपनिवेश का निर्माण शहरों में अमीर गरीब को लेकर हो रहा है। "सामर्थ्य और सीमा" में जिनका अंकन है। "हीरक जयन्ती" में समाजवादी जीवन-मूल्यों को लेकर धनी निर्धन वर्ग की भावनाओं का संघर्ष है। जहाँ एक ओर रिक्शा मालिक बढ़ रहा है तो वहीं दूसरी तरफ उसके चालकों की संख्या बढ़ रही है। उनकी गरीबी बढ़ रही है। एक ओर पूँजीपति वर्ग बढ़ रहा है तो दूसरी ओर श्रम के मूल्यों का शोषण है।"[76]

तत्कालीन उपन्यासों में "अर्थ" के आधार पर वर्ग विषमता का यथार्थ चित्रण मिलता है। देश की अधिकांश जनता भुखमरी, गरीबी, बेरोज़गारी, आर्थिक कठिनाईयों में फँसी हुई है। नरेश मेहता ने "अनदेखे अनजाने पुल" व सुरेश सिन्हा ने "सुबह अँधेरे पथ पर" में नयी वर्ग चेतना का अंकन मार्मिकता से किया है। इस वर्ग चेतना में उनके मूल्य, आदर्श, आचरण, संकल्प, कार्यकलाप, धार्मिक विचार तथा नैतिक मूल्य परिवर्तन हो रहे हैं। सतीश मध्यम तथा निम्न वर्ग की स्थिति को अभिव्यक्त करता है -"इस इलाके में बामन-हरिजन, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग सभी भूख और गरीबी की चक्की में बुरी तरह पिस रहे हैं।"[77] लेखक ने गरीब वर्ग के प्रति उदारवादी दृष्टि अपनायी है। नैतिक, धार्मिक, एवं सामाजिक जीवन के स्तर पर जीवनौचित्य के प्रति सर्तकता दिखाई है। वर्ग वादी चेतना के मूल्य "पानी के प्राचीर" के हरिजन फेंकूं में हरिजन उत्थान के भाव परिलक्षित हैं[78] गांव के मजदूरों और में नया चेतना परिलक्षित है। सरजू सिंह सिरिया से कहता है -"उ पुरानी बातें लद गयी कि बिना

वजह जब चाहा किसी को पकड़वाया और मुरगा बनाकर लटका दिया ।"[79] झिनकू चमार काम करने से साफ मना करता है ।-"हम से मुंह बांधकर काम नहीं होगा सरकार"[80]

नई वर्ग चेतना के विकास ने सामाजिक धारणाओं रीति-रिवाजों, मान्यताओं, तथा जीवनादर्श को झकझोर दिया है । इसीलिए विमल और मोहन "इस देश में वर्ग संर्घष पर आधारित संस्था ही कामयाब हो सकती है,[81] ऐसा मानकर वर्गवादी मूल्यों की स्थापना करते हैं । विमल गांव के सभी वर्गों को समझौता वादी नीति पर लेकर चलना चाहते हैं 2[82] समाज में परम्परागत जमींदार का शोषण खत्म हुआ तो गांव में नये जमींदार वर्ग का उदय हुआ है । वर्गगत संर्घर्ष मजदूर और मालिक , किसान और जमींदार ,तथा पूंजीपति और श्रमिक के बीच हो रहा है । समाज में शोषण की प्रवृत्ति बनी हुई है । वर्ग संघर्ष की स्थिति और तीव्र होती जा रही है । उनके संबंधों में कटुता, और जाति वर्ण धर्म के स्थान पर आज नये वर्ग पनप रहे हैं ।

जीवन-मूल्यों के संदर्भ में साठोत्तरी युग मानवता वादी दृष्टि,राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय जीवन-दृष्टि ,सामाजिक वर्गों के प्रति उदारता, नारी के प्रति उदार दृष्टि तथा आज जीवन में श्रम, क्रान्ति, समता और अर्थ का है । "माटी की महक" का कालीचरण, गौरी, मैंकू काका और मोहन आदि वर्ग विषमता की भावना को समाज से दूर करने का प्रयास करते हैं । निम्न जाति के लोगों को स्वाधीनता के महत्त्व को समझाते हुये कालीचरण कहता है - "संविधान का अर्थ है, गरीब हरिजनों को जो हजारों वर्षों से तिरस्कृत रहते आये हैं, समाज में समता का अधिकार दिलाना ।"[83] इनके अतिरिक्त समाज में विकसित नयी वर्ग चेतना का चित्रण ,महाभोज(मन्नू भण्डारी) प्रश्न और मरीचिका(भगवती चरण वर्मा), तमस (भीष्म साहनी) रिहर्सल (हिमांशु श्रीवास्तव) समय साक्षी है (हिमांशु जोशी,1977) राग दरबारी (श्री लाल शुक्ल) ऋतुचक्र (इला चन्द्र जोशी), अनंतर(जैनेन्द्र), सामर्थ्य और सीमा (भगवतीचरण वर्मा), यह पथ बंधु था (नरेश मेहता) दायरे (रांगेय राघव) अंधेरे बंद कमरे

§मोहन राकेश§, आदि उपन्यासों में भी मिलता है ।

अत: उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि नयी वर्ग चेतना राजनीतिक आधार बन गयी है जो दलों, जातियों,क्षेत्रों और प्रान्तों तथा भाई भतीजावाद में पनपती हुई, नौकर तथा अफसर वर्ग तक पहुँची हुई है जो शोषक वर्ग के भाग बने हुये हैं ।"84 वर्ग संघर्ष ने समानता, सद्‌भाव, सत्य, न्याय, प्रतिष्ठा, सहानुभूति, परोपकार, शान्ति, दया, करूणा, कर्तव्य आदि शाश्वत जीवन के मूल्यों को ठेस पहुँचाई है । इसके प्रभाव से यद्यपि कुछ नये मूल्य, नये संबंध तथा नवीन क्रिया-कलाप की प्रतिष्ठा हुई है । आज समाज में बुद्धिजीवी वर्ग, श्रमजीवी,वर्ग, पूंजीपति वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग आदि वर्ग बने हुए हैं । आज के जीवन मूल्यों के विकास में पूंजीपति वर्ग तथा बुद्धिजीवी वर्ग का योगदान रहा है । और श्रम की प्रतिष्ठा ने परम्परागत जीवन-मूल्यों को विघटित किया । मुख्यत अर्थ संघर्ष ही वर्ग संघर्ष का कारण बना है ।

मूल्यांकन

आज के उपन्यासों में स्त्री पुरूष के पारिवारिक और सामाजिक संबंध, उनके नाते-रिश्ते, उनका परिवार और उनकी वैचारिक मनोवृत्तियों में प्रेम, क्रोध, ईर्ष्या, करूणा, जीवन-मूल्य, संघर्ष ,सुख ,दुख, कुण्ठा, निराशा, काम वासना आदि का चित्रण किया गया है । मनोविज्ञान के आधार पर मानव मन में अहंभाव, कुण्ठा, आत्मपीड़न, परपीड़न दमित वासना, हीनभाव उनके महत्वाकांक्षाओं के चित्रण प्रस्तुत किये हैं । इनका प्रभाव मानव जीवन-मूल्यों पर पड़ा, जिनका अंकन आज के उपन्यासों में दृष्टव्य है ।

साठोत्तरी उपन्यास यौन चेतना, नारी चेतना, और व्यक्ति चेतना, परिवार के विघटन और व्यक्ति आदि को लेकर चले हैं । कुछ ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने स्त्री पुरूष के सेक्स स्वातंत्र्य, परिवार टूटन इत्यादि से संबंधित बदलते हुए परिवेश में कर्तव्य बोध तथा मानव मूल्यों का परिचय दिया है । आर्थिक राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में नई पीढ़ी की बढ़ती हुई तीव्र,

आकांक्षाओं के चित्रण के साथ साथ मध्यकालीन संस्कारों, सामन्तवादी तथा पूँजीवादी संस्कारों पर करारी चोट की है । सुबह अंधेरे पथ पर ,मछली मरी हुई, क्यों फँसे आदि उपन्यास इसी तथ्य को उजागर करते हैं । नारी के उभरते हुए व्यक्तित्व के साथ "एडजस्ट" न होने की समस्या, उनके जीवन कीविद्रूपताओं एवं विसंगतियों का चित्रण नवीन परिस्थितियों के साथ परिवर्तित संदर्भों में, शिवानी, उषा प्रियवंदा, मन्नू भण्डारी, सुरेश सिन्हा, मोहन राकेश, गिरि राज किशोर आदि उपन्यासकारों ने किया है । प्रश्न यह उठता है कि आज का उपन्यासकार स्त्री-पुरूष के संबंध को यौन चेतना से जोड़कर चलते हैं । क्या केवल शारीरिक संबंध ही शेष रह गया है , क्या मानवीय संबंध नहीं हैं ? क्या स्त्री पुरूष की पवित्रता अपवित्रता को नैतिक मापदण्ड में मापा जाना उचित है या नहीं ? इसका समाधान उपन्यासकार नहीं कर पाये हैं ।

आज स्त्री पुरूष के संबंध में दो प्रकार के विचार उपलब्ध होते हैं । §1§ रूढिगत और संस्कारगत बंधन §2§ महत्त्वाकांक्षा और प्रगतिशील विचार । दोनों में ही तीव्र संघर्ष है ।

उपन्यासों में चित्रित स्त्री पुरूष का वैवाहिक संबंध, पति पत्नी का जीवन अपरिचित, अजनबी तथा अकेलेपन की भावना उन्मुक्त सेक्स की बात, भारतीय संबंध में सर्वथा उतनी सही नहीं, जितनी आम उपन्यासों में पाई जाती है । आज का सामाजिक जीवन इतना अतृप्त नहीं हो गया है जितना नया उपन्यासकार मानने लगा है । हाँ, बहुत कम महानगरों का उदाहरण समस्त भारत का प्रतिनिधि मानकर चलेने वाले उपन्यासकार समाज को सही, मार्गदर्शन, आदर्श, आचार-विचार तथा मूल्य नहीं दे सकेंगे और यथार्थ के नाम पर, उनकी काल्पनिक कृतियाँ किसी महत्वपूर्ण सिद्धि तक नहीं पहुँचा सकती हैं । हाँ, केवल पाठकों की भोगवादी अभिवृत्तियों को संतुष्ट करने का सरल साधन बन सकती हैं ।

यही कारण है कि अधिकांश उपन्यासकार अनास्था ,अविश्वास, कुंठा, निराशा, घुटन, असंतोष आदि को अपनाने लगे हैं । और सामाजिक जीवन -

मूल्यों को त्याग कर संकीर्ण व्यक्तिवादी विचारों को ग्रहण कर रहे हैं । हम देखते हैं कि सामान्य जीवन इतना असंतोष स्वच्छंद सेक्स तथा अपरिचित नहीं हुआ जितना आज के उपन्यासों में चित्रित है । हाँ, शिक्षा के दबाव के कारण कुछ सामाजिक वर्गों के नये प्रतिमान उभरे हैं, जिनके आधार पर कुछ अंश तक स्वीकार किया जा सकता है । समानता, स्वतंत्रता, ककककककक महत्वाकांक्षा, अधिकार, की भावना अधिक व्याप्त हैं । परिणामत: समाज की रीति-रिवाजों, धारणाओं, आचारों विचारों, व्यवहारों, कार्यकलापों के प्रति विद्रोह की चेतना अवश्य जागृत हुई है । आज के उपन्यासों में कुछ भोगे हुए व्यक्तियों के कटु अनुभव यथार्थ का चित्रण है ,न कि समग्र भारतीयजीवन का वास्तविक सामान्य जीवन का ।

युगीन उपन्यासों में सामाजिक, व्यक्तिगत, धार्मिक नैतिक, और राजनीतिक जीवन-मूल्यों का विघटन अवश्य हुआ है किन्तु उनके स्थान पर स्वस्थ जीवन-मुल्य निर्मित नहीं हो पाये हैं । प्राचीन जीवन-मूल्यों, आदर्शों, प्रतिमानों और मान्यताएं प्राय: समाप्त सी हो रही हैं । परन्तु उनके स्थान पर नये सामाजिक, आदर्श तथा स्वस्थ जीवन मूल नहीं स्थापित हो पाये हैं ।अगर होंगे भी तो, सापेक्ष मुल्य बनेंगे । इस मूल्य संक्रमण की स्थिति में सब जगह भ्रान्ति, भय, संत्रास, संदेह तथा निराशा आदि का वातावरण बनता जा रहा है । यही कारण है इस विषम स्थिति में मूल्य स्पष्ट नहीं पाता है । कभी पुराना है नवीनता का द्योतक बन जाता है तो कभी नया ही पुराना प्रतीत होने लगता है ।"[86] मूल्य संक्रमण की स्थिति, पुरानी और नयी पीढ़ी के बीच की पड़ी हुई खाई को गहरी करती जा रही है ।[87]

यह स्पष्ट है कि नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच वैचारिक द्वंद्व और संघर्ष परिव्याप्त है । इस द्वंद्व से परम्परागत जीवन-मूल्य, मान्यताओं तथा धारणाओं में टकराव आया है । अहिंसा, करूणा, प्रेम, ममता, दया, धैर्य, आदर, शिष्टाचार, जन सेवा, कि दायित्व बोध आदि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में धूमिल हो रहे हैं । फिर भी समाज में इनका अस्तित्व भी बना हुआ है । राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में जीवन-मूल्य बाह्य और आंतरिक रूप से परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं, जिनका अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे ।

- संदर्भ - सूची -

A डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय: द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास P. 78-
1- शिव प्रसाद सिंह = अलग अलग वैतरणी, पृष्ठ 157
2- ,, ,, ,, ,, , पृष्ठ 262
3- ,, ,, ,, ,, पृष्ठ 263
4- ,, ,, ,, ,, पृष्ठ 612
5- राम दरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब , पृष्ठ 79
6- शिव प्रसाद सिंह = अलग अलग वैतरणी , पृष्ठ 297
7- यशपाल : क्यों फँसे, पृष्ठ 32
8- रांगेय राघव : आखिरी आवाज, पृष्ठ 32
9- श्री लाल शुक्ल : राग दरबारी, पृष्ठ 366
10- राम दरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब , पृष्ठ 110
11- ~~सूखता~~ राम दरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब, पृष्ठ 67
12- यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र : चूनर की पीड़ा , पृष्ठ 65
13- अमृत लाल नागर : अमृत और विष, पृष्ठ 234
14- ,, ,, ,, पृष्ठ 214
15- यशपाल : क्यों फँसे : पृष्ठ 32
16- कमलेश्वर : डाक बंगला , पृष्ठ 65
17- अनंत गोपाल शेवड़े : कोरा कागज़, पृष्ठ 61
18- श्री लाल शुक्ल : राग दरबारी , पृष्ठ 66
19- सुदर्शन मजीठिया : लोहे की लाशें, पृष्ठ 248
20- भगवती प्रसाद वाजपेयी : गुप्तधन , पृष्ठ 15
21- सच्चिदानंद धूमकेतु : माटी की महक, पृष्ठ 336
22- ,, ,, ,, ,, पृष्ठ 258
23- कान्ति वर्मा : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ भूमिका
24- यशपाल : गांधीवाद की शव यात्रा, पृष्ठ 143
25- अमृतलाल नागर : अमृत और विष, पृष्ठ 557
26- ,, ,, ,, पृष्ठ 557
27- सच्चिदानंद धूमकेतु : माटी की महक , पृष्ठ 111
28- ,, ,, ,, ,, ,पृष्ठ 110

29- सच्चिदानंद धूमकेतु : माटी की महक , पृष्ठ 121
30- रांगेय राघव : आखिरी आवाज, पृष्ठ 38
31- डॉ राम गोपाल सिंह : आधुनिक हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ 211
32- राम दरश मिश्र : जल टूटता हुआ , पृष्ठ 31
33- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी , पृष्ठ 328
34- नरेन्द्र शर्मा : मन का मीत , पृष्ठ 18
35- नरेन्द्र शर्मा : मन का मीत, पृष्ठ 96
36- ,, ,, पृष्ठ 117
37- ,, ,, ,, पृष्छ 111
38- रांगेय राघव : दायरे , पृष्ठ 91
39- जैनेन्द्र कुमार : अनंतर , पृष्ठ 43
40- रांगेय राघव : दायरे , पृष्ठ 96
41- भगवती चरण वर्मा : सामर्थ्य और सीमा , पृष्ठ 132
42- सुरेश सिन्हा : हिन्दी उपन्यास , पृष्ठ 133
43- सुरेश सिन्हा : माटी की महक , पृष्ठ 33
44- नरेश मेहता : यह पथ बंधु था , पृष्ठ 71
45- अमृत लाल नागर : अमृत और विष, पृष्ठ 409
46- ,, ,, ,, , पृष्ठ 412
47- भगवती चरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 104
48- यशपाल : क्यों फंसे ,पृष्ठ 31
49- राजेन्द्र यादव : मंत्रबिद्ध , पृष्ठ 41
50- मोहन राकेश : अंधेरे बंद कमरे , पृष्ठ 138
51- अमृत लाल नागर : अमृत और विष , पृष्ठ 228
52- राम दरश मिश्र = सूखता हुआ तालाब, पृष्ठ 94
53- ,, ,, ,, ,, ,पृष्ठ 12
54- सुरेश सिन्हा : सुबह अंधेरे पथ पर , पृष्ठ 227
55- ,, ,, ,, पृष्ठ 263
56- राही मासूम रजा : आधा गांव, पृष्ठ 205
57- श्री लाल शुक्ल : राग दरबारी, पृष्ठ 100
58- उषा प्रियवंदा : रूकोगी नहीं राधिका, पृष्ठ 38
59- भगवती चरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 173

60- रागेय राघव : आखिरी आवाज, पृष्ठ 99

61- रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृष्ठ 32

62- ,, ,, सूखता हुआ तालाब, पृष्ठ 5

63- गिरिराज किशोर : चिड़ियाघर, पृष्ठ 45

64- सुरेश सिन्हा : सुबह अँधेरे पथ पर, पृष्ठ 138

65- ,, : पत्थरों का शहर, पृष्ठ 326

66- श्री लाल शुक्ल : राग दरबारी, पृष्ठ 365

67- भगवती चरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 117

68- अमृत लाल नागर, : अमृत और विष, पृष्ठ 114

69- अमृत लाल नागर : नाच्यौ बहुत गोपाल, पृष्ठ 71

70- अमृत लाल नागर : नाच्यौ बहुत गोपाल, पृष्ठ 111

71- रागेय राघव : धरती मेरा घर, पृष्ठ 70

72- राही मासूम रजा : टोपी शुक्ला, पृष्ठ 29

73- सुरेश सिन्हा : पत्थरों का शहर, पृष्ठ 141

74- सुदर्शन मजीठिया : लोहे की लाशें, पृष्ठ 207

75- अमृत लाल नागर : अमृत और विष, पृष्ठ 65

76- नागार्जुन : हीरक जयन्ती, पृष्ठ 73

77- राम दरश मिश्र : जल टूटता हुआ , पृष्ठ 16

78- राम दरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृष्ठ 300

79- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी, पृष्ठ 50

80- ,, ,, ,, ,, पृष्ठ 217

81- विश्म्भरनाथ उपाध्याय : रीछ , पृष्ठ 413

82- , पृष्ठ 463

83- सच्चिदानंद धूमकेतु : माटी की महत्व , पृष्ठ 159

84- राम दरश मिश्र : अपने लोग, पृष्ठ 162

85- इलाचन्द्र जोशी : ऋतुचक्र, पृष्ठ 95

86- ,, ,, ,, , पृष्ठ 173

87- ,, ,, ,, , पृष्ठ 174

-::-